।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 119 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अप्रेल– 2018 30/–प्रति

File Photo - 2010

ऑनलाइन शक्तिपात-दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग-ऑन करें-
Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -
07533006009

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय योग महोत्सव-2018 में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। (1-7 मार्च 2018)

विदेशी साधकों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया। कई साधकों को हुए अद्भुत अनुभव।

www.the-comforter.org

''ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः''

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

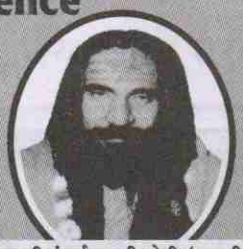

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 10 अंक : 119 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अप्रेल – 2018

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सर्वोच्च कृति मानव 4
तेरा तुझको अर्पण (सम्पादकीय) 5
शिष्यत्व भाव ही सर्वोपरि है 6
भगवान् की माया का खेल बड़ा विचित्र है 7-8
नाम (मंत्र) जप 9
हृदय मंथन 10
योगियों की आत्मकथा 11-12
योग के आधार 13
मेरे गुरुदेव 14
हठयोग 15
सही राह (कहानी) 16-17
सद्गुरुदेव की पावन शरण 18
चित्र पृष्ठ 19-22
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति 23-28
अनुभव-प्रधान युग का आगमन 29
अहं से मुक्ति 30
समाधि 31-32
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 33
योग के बारे में 34
संस्था के उद्देश्य 35
योग का सर्वोत्तम उद्देश्य 36
सम्पादकीय शेष पृष्ठ 37
ध्यान विधि 38

www.the-comforter.org

सर्वोच्च कृति-"मानव"

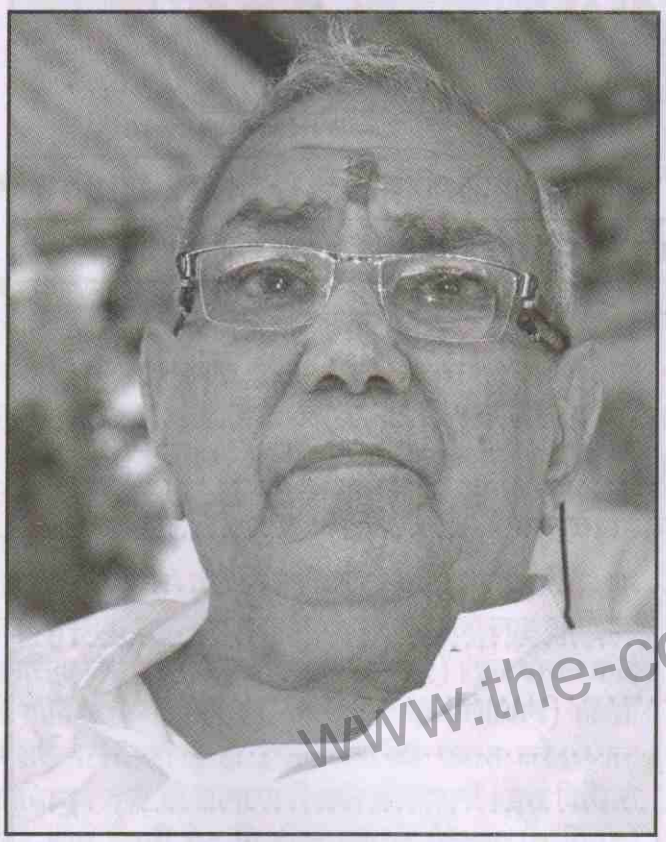

"परमात्मा द्वारा सृष्ट हुए वे देवता, इस महान् समुद्र में आ पड़े और उन्हें भूख और प्यास से युक्त कर दिया गया। उन देवताओं ने प्रभु से कहा कि हमें कोई स्थान प्रदान कीजिए जिसमें स्थित होकर हम अन्न का भक्षण कर सकें। तब परमात्मा ने उनके लिए गाय का शरीर बनाया। जिसे देखकर देवताओं ने कहा कि यह हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। फिर परमात्मा ने उनके लिए अश्व(घोड़े) के शरीर का निर्माण किया। उसे देखकर देवताओं ने कहा कि यह भी हमारे लिये उपयुक्त नहीं है।

इसके अनन्तर परमात्मा ने उनके लिए 'मनुष्य' के शरीर का निर्माण किया। उसे देखकर देवताओं ने कहा कि यह सबसे सुन्दर बना है। फिर परमात्मा ने उनसे कहा कि अपने-अपने योग्य स्थानों में प्रवेश कर जाओ।"

ऐतरेय उपनिषद्-1/1,2,3

इस प्रकार समस्त देवताओं का निवास स्थल मानव शरीर है। प्रत्येक अंग में अलग-अलग देवताओं का निवास और उनका अलग-अलग कार्य है। यदि तैंतीस कोटि देवताओं की शक्ति का सर्जनात्मक सदुपयोग करना है तो एक ही उपाय है-अपना संपूर्ण समपर्ण व एकाग्रता सद्गुरुदेव भगवान् के श्री चरणों में समर्पित करना।

लेकिन मानव मन इतना चंचल है कि कामनाएँ मरती ही नहीं हैं। बाहर से जप,तप, तीर्थ, यात्रा व कितने ही धार्मिक प्रपंच करते रहें। क्योंकि बाहरी वातावरण की वृत्तियाँ मानव शरीर के रोम-रोम में घुल-मिल जाती हैं। जब तक कोई ऐसा सूक्ष्म और सर्वशक्तिमान तत्त्व सक्रिय नहीं हो तब तक इन वृत्तियों से छुटकारा नहीं पाया जा सकता है। जबकि वैदिक दर्शन में शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का सिद्धांत है। शब्द भी सद्गुरुदेव द्वारा चेतन और सजीव किया हुआ हो तो ही परिणाम देता है। यदि सद्गुरुदेव प्रसन्न होकर उस शब्द (मंत्र) का जप करने का आदेश दें तो वह मंत्र पूर्ण फलदायी होता है। मंत्र के सघन जाप के प्रवाह से रोम-रोम खिल उठता है। और वहाँ जो बुरी प्रवृत्तियाँ, तामसिकताएँ आदि घर कर बैठी हैं, वह समूल नष्ट हो जाती है, सात्त्विक और दिव्य अग्नि की ज्वाला में जल जाती हैं। मनुष्य का जो असली स्वरूप है-तद्रूप(परब्रह्म) वह प्रकट हो जाता है। इसलिए आज सद्गुरुदेव द्वारा दिये गए मंत्र के सघन जप से मानव मात्र में बड़ा ही अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

www.the-comforter.org

सम्पादकीय .....

तेरा तुझको अर्पण.....

मेरा मुझ में कछु नहीं, जो कुछ है सो तेरा। तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा?

जीवन में प्रत्येक कार्य की पूर्णता के लिए, उसको कार्य रूप में परिणित करने के लिए, अपने आपको सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ समर्पित करना पड़ता है।

भारतीय इतिहास समर्पण और त्याग की गौरव-गाथाओं से भरा पड़ा हैं। किसी भौतिक वस्तु की सिद्धि के लिए कुछ हद तक वहाँ एकाग्र होना पड़ता है, तभी वह सिद्ध होती है, मूर्तरूप लेती है जबकि आध्यात्मिक सिद्धि और क्रांति के लिए अपना सम्पूर्ण समर्पण सद्गुरु चरणों में करना पड़ता है तभी हम परम शिखर को प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे उदाहरण भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अजर-अमर रखे हुए हैं-

आध्यात्मिक क्षेत्र में **भक्त शिरोमणी करमोंबाई**, कबीर, तुलसी, जायसी, मीरा, तुकाराम, धन्ना, नानक, शंकराचार्य, ज्ञानेश्वर, रैदास, नामदेव आदि-अनेकानेक संत-ऋषि अपने गुरुदेव के सामने सम्पूर्ण समर्पण से ही पूर्ण हुए। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में वीरों ने अपने खून की नदियाँ बहायी। जिस पर आज हमारे जीवन की नावें चल रही हैं। ऐसी कौनसी माँ, कौनसा पिता, भाई, बहिन, पत्नी और सहयोगी था जिसने कहा कि तू देश के लिए मर मिट। सत्य के लिए हमेशा परिस्थितियाँ प्रतिकूल ही रहती है, यदि हम किसी नये और क्रांतिकारी कार्य के लिए रवाना होते हैं तो सबसे पहला रोड़ा, पहली ठोकर और पहला विरोध घर-परिवार से शुरू होता है और ऐसा हर क्रांतिकारी, महापुरुष और यहाँ तक कि अवतारों को भी झेलना पड़ा है।

हिन्दू धर्म की पताका विश्व मंच पर फैलाने वाले विश्व विजयी स्वामी श्री विवेकानन्द जी के साथ जो घटित हुआ, इतिहास उसका गवाह है। कितने संकट झेले, व्यंग्य और उलाहाने सुने। पत्थर का हृदय बनाकर गुरुवाणी को मूर्तरूप देने के लिए विश्व समर में निकल पड़े। लेकिन स्वामी जी की एक बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि उन्होंने वही किया जो अपने सद्गुरुदेव ने आदेश दिया। आदेश के विपरीत कभी नहीं गये। अपनी भावुकता में कभी कोई कदम नहीं उठाया। हमेंशा यही प्रार्थना करते रहते कि हे गुरुदेव ! वही हो जो आप चाहते हो, मेरी मनमर्जी से कभी कुछ नहीं हो।

स्वामीजी के घर में माताजी का विरोध एवं घर की प्रतिकूल परिस्थितियों का हकीकत नाटकीय रूपान्तरण कुछ इस प्रकार है-

भुवनेश्वरीः (माँ) (आहत् दृष्टि से नरेन्द्र को निहारती हुई उपालम्भ भाव से) छह-छह दिन बिना किसी सूचना के ..... बिना काम के व्यर्थ ही घर से बाहर रहकर लौटे.... तो तू ही सोच ले..... वो बेटा किसी भी दुखिया माँ के लिए सत्कार का पात्र होगा..... या धिक्कार का?

(नरेन्द्र के पास माँ के इस तर्क का कोई उत्तर न था।)

(सावेश) इतने दिन बाद आज सुध आई है तुझे घर की?

नरेन्द्रः- (स्वामी विवेकानन्द): ठाकुर (रामकृष्ण परमहंस) अचानक गम्भीर रूप से रूग्ण हो गए, माँ ! पानी हाटी के चिउड़ा महोत्सव में वर्षा के बीच भी नाचते-गाते रहने से गले की गिल्टियाँ बिगड़ गई। वहाँ दक्षिणेश्वर में डॉक्टर महेन्द्रनाथ सरकार की औषधियों का भी कोई लाभ न होने से उन्हें कलकत्ता लाकर काशीपुर में रखाना पड़ा। (रुककर) डॉक्टरों का कहना है कि ठाकुर को कण्ठ-कैंसर है। रक्तस्त्राव भी होने लगा है अब।

भुवनेश्वरीः (आश्चर्य) तू इतने दिन से कलकत्ता में ही रहा-और घर आने का भी समय नहीं मिला तुझे?

नरेन्द्रः ठाकुर को ऐसी अवस्था में छोड़कर हम कहीं भी कैसे जा सकते थे, माँ? (रुककर) सच मान..... पिछले छह दिनों में पलभर को भी हमने ठाकुर को अकेला नहीं छोड़ा..... न सोये....

भुवनेश्वरीः (आशंकित स्वर में) तब तो इतने दिन स्कूल भी नहीं गया होगा?

नरेन्द्रः (मस्तक झुकाए सहमे भाव से) हाँ, माँ ! मैंने स्कूल से अवकाश माँगा, पर लम्बे समय के लिए अवकाश को स्वीकृति न मिलने के कारण, मैंने-वह नौकरी छोड़ दी।

(सुनकर धाक्क रह गई भुवनेश्वरी। ऐसा लगा-मानो किसी ने आकाश की ऊँचाईयों से फैंक दिया हो नीचे की ओर।)

भुवनेश्वरीः (चौंककर) क्या? क्या कहा तू ने? (अविश्वास भाव से) इतनी कठिन भाग दौड़ के बाद नौकरी मिली..... और वो भी तू ने छोड़ दी?

नरेन्द्रः तो क्या करता माँ? नौकरी के साथ गुरु-सेवा सम्भव नहीं हो पा रही थी।

भुवनेश्वरीः(तीखी दृष्टि से घुरती हुई) गुरु सेवा इतनी महत्त्वपूर्ण लगी तुझे और हमारी सेवा का कुछ भी ध्यान नहीं तुझे? (भर्त्सना के स्वर में) ये भी नहीं सोचा.... घर में असहाय विधवा माँ है..... छोटे भाई हैं.... नौकरी के बिना उनका पालन-पोषण कैसे होगा?

नरेन्द्रः मनुष्य की भला क्या सामर्थ्य है,माँ ! कि किसी का पालन-पोषण कर सके। (रुककर)

शेष पृष्ठ 37 पर....

www.the-comforter.org

शिष्यत्व भाव ही सर्वोपरि है

सद्गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण ही शिष्य के लिए कल्याण का पथ है

महाराजश्री के साथ सत्संग से मेरे अन्तर में यह बात स्थापित हो चुकी थी, कि कोई साधक गुरु-कार्य करते हुए भी, गुरु नहीं हो जाता। **''गुरु-कार्य केवल गुरु-प्रदत्त ऐसा उत्तरदायित्व है जिसे साधक को अभिमानरहित हो कर ही निभाना होता है।''** गुरु होने का अभिमान, गुरु-प्रदत्त उत्तरदायित्व का स्वरूप बदल देता है। गुरु होने का अभिमान साधक को गुरुपद के वास्तविक स्वरूप तथा स्तर से तो दूर करता ही है, उसके शिष्यत्व के भाव की नींव भी हिला देता है। गुरु होने का अभिमान-दम्भ एवं कपट की पराकाष्ठा है, सुपथ छुड़ावाकर, कुपथ पर आरुढ़ कर देता है, साधन-पथ में रहते हुए भी, साधक को संसारी बना देता है, साधक बातें कल्याण की करता है किन्तु अपना तथा उनके संपर्क में आने वाले अन्य शिष्यों के अकल्याण में प्रवृत्त बना रहता है। गुरु-होने का अभिमान अन्दर ही अन्दर साधक को खोखला किए जाता है। यह सारी बातें महाराजश्री की कृपा से मेरे अन्तर में स्पष्ट हो चुकी थीं। किन्तु फिर भी, यदि हो सके तो अभी इस विषय में कुछ अधिक स्पष्टीकरण सुनने की आकांक्षा मन में बनी हुई थी।

दिल्ली में जहाँ हम ठहरे थे वह स्थान काफी बड़ा तथा खुला था। आस-पास बगीचा-फुलवाड़ी का भी काफी विस्तार था। चिकित्सा की सभी सेवाएँ उपलब्ध थीं। शाम के समय महाराजश्री को बाहर बगीचे में कुर्सी पर बिठा दिया जाता था। दोपहर के समय महाराजश्री के पास प्रायः मैं अकेला ही रह जाता था। एक दिन सुअवसर देख कर, मैंने इस विषय को छेड़ दिया। महाराजश्री सुन कर एकदम गंभीर हो गए।

महाराजश्री बोले-देखो ! गुरु-कार्य करते हुए, जब किसी के द्वारा किसी साधक को शिष्यरूप में स्वीकार किया जाता है तो यह साधक के शिष्यत्व के निखार कि लिए होता है। **शिष्यत्व उसका प्रथम स्वरूप** है तथा यही प्रथम स्वरूप, **साधन-पथ** पर आरुढ़ रहते, अन्तिम-लक्ष्य की प्राप्ति तक बना रहना चाहिए। **गृहस्थ कार्य, व्यापार, समाज-सेवा या कुछ भी उत्तरदायित्व निभाते हुए, अन्तर में शिष्य भाव स्थिर रहना चाहिए।** यदि उसे गुरु-कार्य भी सौंप दिया जाए तो भी उसका वास्तविक शिष्य भाव का लुप्त नहीं होना ही, उसके **अध्यात्म-उत्थान** में हितकर है। संसार का प्रत्येक् मनुष्य शिष्य है, केवल ईश्वर ही एक मात्र गुरु है। अतः गुरुओं का अन्तर मन भी शिष्यत्व ही धारण किए रहता है। गुरु होने का अभिमान, शिष्यभाव पर आवरणरूप है।

> शिष्य को स्वप्न में भी ये विचार ना करना चाहिए कि मुझे गुरुपद सौंप दें। मुझमें वे सारी योग्यताएँ हैं। ऐसी कामनाएँ पालने वाले बहुत से साधक पथभ्रष्ट हो गए हैं। ये एक ईश्वरीय विधान है जो एक समय में एक ही व्यक्ति के पास होता है।
>
> वर्तमान में जो सद्गुरु हैं वे ही जानते हैं कि इस पद के योग्य कौन है? बाहरी व्यक्ति इसका निर्धारण नहीं कर सकता। शिष्य का काम है, अपने आत्म कल्याण के लिए सिर्फ अपनी आराधना पर ध्यान देना।

सामान्यतः साधक शिष्यभाव को अन्तर में स्थिर रख पाने में असमर्थ होते हैं। सांसारिक कार्यों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि संसारी, गृहस्थ, व्यापारी, कलाकार, मजदूर, किसान या विद्वान होने के अभिमान में, अपने-आप को रंग लेते हैं, यदि गुरु-कार्य का निर्वाह करते हैं तो शिष्य के वास्तविक कर्तव्य से विमुख हो जाते हैं। ऐसे लोग संसार में चाहे कितना भी ऊपर चढ़ते जाएं किन्तु अध्यात्म की दृष्टि से पतन की ओर ही अग्रसर होते हैं।

शिष्यभाव निराभिमानता, नम्रता, सेवा, ज्ञान की पिपासा एवं भावना के उदय का प्रदाता है। शिष्य बन कर साधक अपने दोषों, विकारों तथा अवगुणों को देखता है। शिष्यभाव, जीवत्व की वास्तविकता से परिचय करवाता है, भ्रान्तियों की निवृत्ति के लिए प्रयत्नशील होने की प्रेरणा प्रदान करता है एवं संसार के यथार्थ स्वरूप को प्रकट करता है। **शिष्यत्व ईश्वरीय वरदान है,** शिष्यत्व पार जाने के लिए नाव के समान है। शिष्यत्व में ही गुरुत्व निहित है जो कालान्तर में सेवा, साधन तथा समर्पण से विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ- स्वामी शिवोम तीर्थ
'अंतिम रचना'
पुस्तक पृष्ठ-279

www.the-comforter.org

भगवान् की माया का खेल बड़ा विचित्र है

मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के माध्यम से, प्रभु जो कुछ करवाने जा रहे हैं, वह भारी अचम्भे की बात है। जो कुछ मेरे माध्यम से होने जा रहा है, उसके बारे में, संसार के आम व्यक्ति के सामने, अगर मैं बताने लगूँ तो मैं निश्चित तौर पर पूर्ण रूप से पागल घोषित कर दिया जाऊँगा। **संसार में एक रेगिस्तानी भाग पर एक गरीब की कच्ची झोंपड़ी में पैदा प्राणी संसार में जो कुछ करने जा रहा है, वह ईश्वर का भारी चमत्कार है।** सन् 1984 में यूहन्ना का 15 : 26,27 तथा 16 : 7 से 15 का अंश पढ़ने पर मुझे बड़ी जिज्ञासा हुई कि यह मेरे प्रश्न का कैसा उत्तर मिला। पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि वह अंश तो ईसाइयों की पवित्र धार्मिक पुस्तक **'बाइबल'** का अंश था।

अनायास मुझे कुछ दिनों बाद बाइबल का एक भाग **The New Testament** (द न्यु टेस्टामेन्ट) मिल गया। वह पुस्तक एक हिन्दी अनुवाद थी। मूल भाषा का हिन्दी अनुवाद बहुत गलत अर्थ समझा रहा था। इस पर मैंने वी. के. शर्मा नामक रेलवे अस्पताल, बीकानेर की मैट्रन से मूल भाषा की बाइबल ली। उसके विशेष दो अंश मैंने मेरी डायरी में लिखे, जो कि मेरे से सम्बन्धित है, जिसे परम सत्ता ने मुझे दिखाया और उनकी प्रत्यक्षानुभूति करवाई।

St. John16 : 12 से 15 की सभी बातें जब सच्ची प्रमाणित होने लगी तो मुझे भारी आश्चर्य होने लगा। एक दिन मैंने सोचा इस आनन्द के बारे में बाइबल में क्या कहा है? तो मुझे प्रेरणा मिली कि St. John 15 : 11 तथा भजन संहिता 23 : 5 पढ़ूँ। जब मैंने उस अंश को पढ़ा तो भारी अचम्भा हुआ। जो कुछ लिखा था, ठीक वैसा ही आनन्द मेरे द्वारा मेरे शिष्यों में फैल रहा था। इस पर मुझे विचार आया कि मुझे तो आराधना विशेष के कारण ऐसा हो रहा है, परन्तु मुझसे जुड़ने वाले लोगों को ऐसा क्यों हो रहा है? इस पर मुझे प्रेरितों के काम का 1: 5 का अंश

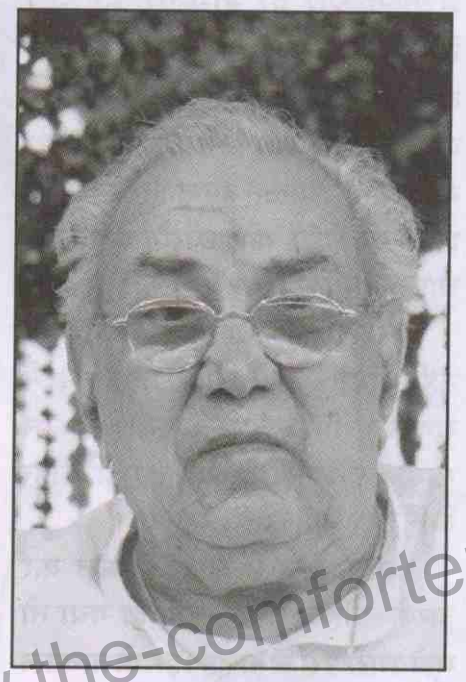

दिखाया गया। उसे पढ़ कर, मैं कुछ भी नहीं समझा। विचार आया कि मुझसे सम्बन्धित सभी लोगों को प्रत्यक्षानुभूतियाँ किस कारण से हो रही है? इस पर मुझे St. John 3 : 3 से 8 तक का अंश पढ़ने का आदेश मिला। उसे पढ़ने से, मैं समझा कि यह हिन्दू दर्शन के द्विज बनने के सिद्धान्त की बात है।

मेरी आराधना का तरीका तो हिन्दू दर्शन के उस सिद्धान्त पर आधारित है कि **सारा ब्रह्माण्ड अन्दर है। अतः** उस परमसत्ता से सम्पर्क **अन्तर्मुखी** हुए बिना असम्भव है। इस पर मुझे St. John 2 : 19 से 21 तथा 2Coriuthiaws का 6: 16 भाग देखने की प्रेरणा मिली।

मुझे उपर्युक्त तथ्यों ने बहुत प्रभावित किया। विचार आया संसार के लोगों ने स्वार्थवश अलग-अलग धर्म और सम्प्रदाय बनाकर उनके ठेकेदार बने बैठे हैं। ईश्वर ने जितने भी संत पैदा किये, वे संसार के सभी प्राणियों के लिए कार्य कर गये हैं। हिन्दू मुसलमान, ईसाई, यहूदी, बौद्ध जैन आदि सभी मानवीय बुद्धि का चमत्कार है।

एक दिन विचार आया कि इस समय तो बहुत कम लोगों से सम्पर्क हैं परन्तु जिस समय संसार के विभिन्न लोगों से सम्पर्क होगा तो फिर कैसी स्थिति होगी? इस पर प्रेरितों के काम 2 : 14 से 18 को देखने की प्रेरणा मिली। 2 : 33

उपर्युक्त तथ्यों को देख कर मुझे बड़ा अचम्भा हो रहा है। दो हजार वर्ष पहले जो तथ्य एक महान् आत्मा ने बताए, वे सभी मेरे जैसे साधारण व्यक्ति से प्रमाणित होते देख बड़ा अचम्भा हो रहा है। बाइबल और गीता में लिखी सभी बातें, मैं भौतिक जगत् में प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। अति शीघ्र सभी तथ्य संसार भर में प्रकट होने वाले हैं।

प्रभु की लीला विचित्र है।

ईसाइयों की प्रथम St. John द्वारा लिखी **"जीवन का मार्ग"** सन् 1984 में अनायास पढ़ने को मिली। परन्तु बाइबल में वर्णित बातों की

www.the-comforter.org

प्रत्यक्षानुभूतियाँ तथा साक्षात्कार बहुत पहले से प्रारम्भ हो गये थे। The new Testament तो सन् 1986 के अन्तिम दिनों में मिला, इसके बाद सभी तथ्यों का, जो बाइबल में दो हजार साल पहले लिखा दिया गया था, कार्यरूप में मेरे माध्यम से परिणित होते हुए, परमसत्ता द्वारा दिखाया गया जो बड़ी विचित्र बात है।

पश्चिमी जगत् को स्वीकार करने में भारी मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु सोने को जंग नहीं लगता। आखिर सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ेगा। आइन्सटीन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि अनादिकाल से बोले गये शब्द ब्रह्माण्ड में आज भी मौजूद है। उसे वैज्ञानिक उपकरण से सुने जा सकते है। **मैं कहता हूँ, शब्द ही नहीं सभी घटनाओं के दृश्य भी चाहे वे भूतकाल की है या भविष्य में घटने वाली है, देखे,सुने जा सकते हैं। मैं इसे प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। यीशु-मूसा तो कल हुए थे।**

मैंने एक बार एक दृश्य देखा। मैं किसी सागर को पार करके उसके किनारे पहुँचा। उस सागर में बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थी। परन्तु उससे बाहर निकलने के लिए जिन चट्टानों पर चढ़ना था, वह इतनी ऊँची थी कि मेरे हाथ की पकड़ से बाहर थी। अचानक क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही बलिष्ट व्यक्ति ठीक मेरे ऊपर वाली चट्टान पर आकर खड़ा हो गया और झुक कर अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ नीचे की ओर बढ़ा दिया। मैंने उसका दाहिना हाथ मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लिया और उसके सहारे झूलने लगा। मैंने सोचा वह मुझे खींच कर निकाल लेगा, परन्तु उसने एक इंच भी मुझे ऊपर नहीं खिंचा, परन्तु मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रहा, छोड़ा नहीं।

मैं बहुत परेशान हुआ सोचा क्या किया जाय। फिर मैंने मेरे दाहिने हाथ की ताकत के सहारे मेरे शरीर को संभाला और मेरे बांये पैर को ऊपर किनारे की तरफ बढ़ाया। संयोग से मेरे बांए पैर का अंगुठा ऊपर की चट्टान के ऊपर टिक गया और उस पर शरीर का वजन संभालते हुए दाहिने हाथ की शक्ति से शरीर को ऊपर ढकेलते हुए बाहर आ गया।

पहले मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे बाहर निकलने में सफलता मिल जायेगी क्योंकि ऊपर खड़ा अतिबलिष्ट व्यक्ति मुझे बाहर बिलकुल नहीं खींच रहा था।

अतः जब मैं बाहर निकल कर उसके दाहिनी तरफ खड़ा हो गया तो मुझे भारी प्रसन्नता हुई। इसके तत्काल बाद वह दृश्य खत्म हो गया। और सभी बातें बाइबल से मिल कर वैसे ही सही प्रमाणित हो रही हैं, जैसा उसमें लिखा है। एक दिन ऊपर के दृश्य की बात याद आ गई और सोचा उक्त दृश्य का अर्थ आज तक समझ में नहीं आया। इस पर मुझे प्रेरितों के काम के 2 : 33 को देखने की प्रेरणा मिली। उसे पढ़कर मुझे भारी अचम्भा हुआ। सोचा परमात्मा किस प्रकार जीवन में होने वाली घटनाओं को निश्चित समय पर अपने द्वारा निश्चित किये हुए तरीके से समझा रहा हैं। **मानवीय बुद्धि जिस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकती, ईश्वर क्षण भर में उसे सम्भव करके कार्य रूप में परिणित कर देता है।**

मुझे भारी अचम्भा हो रहा है। एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति से ये असम्भव कार्य क्यों करवा रहे हैं? कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौंपे। जिसकी संसार में प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता हो, इस पर मुझे उत्तर मिला कि यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता।''

अतः अदृश्य सत्ता के इशारे पर संसार में निकल पड़ा हूँ। मुझे न सफलता से खुशी होती है न असफलता से दुःख क्योंकि मैं तो उस सत्ता का दास हूँ, केवल मजदूरी का अधिकारी हूँ, घाटे-नफे से मुझे कोई वास्ता नहीं।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
8.9.1988

मुक्तिः- मुक्ति कोई खिलौना नहीं है, जो गुरु के पास जाते ही पकड़ा देगा। गुरु तो क्रियात्मक विकास का पथ बताता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

"नाम (मंत्र) जप"

"इस प्रकार आप नाम जप और ध्यान करोगे तो आप में यह परिवर्तन आ जायेगा। योग होगा, उससे शारीरिक बीमारी खत्म और नाम का नशा आ जायेगा तो वृत्ति बदल जायेगी। मानसिक रोग खत्म और नशों से छुट्टी। शारीरिक रोग खत्म, मानसिक रोग खत्म, सभी नशों से छुट्टी तो यह जीवन तो सुधर ही गया।" -सद्गुरुदेव सियाग

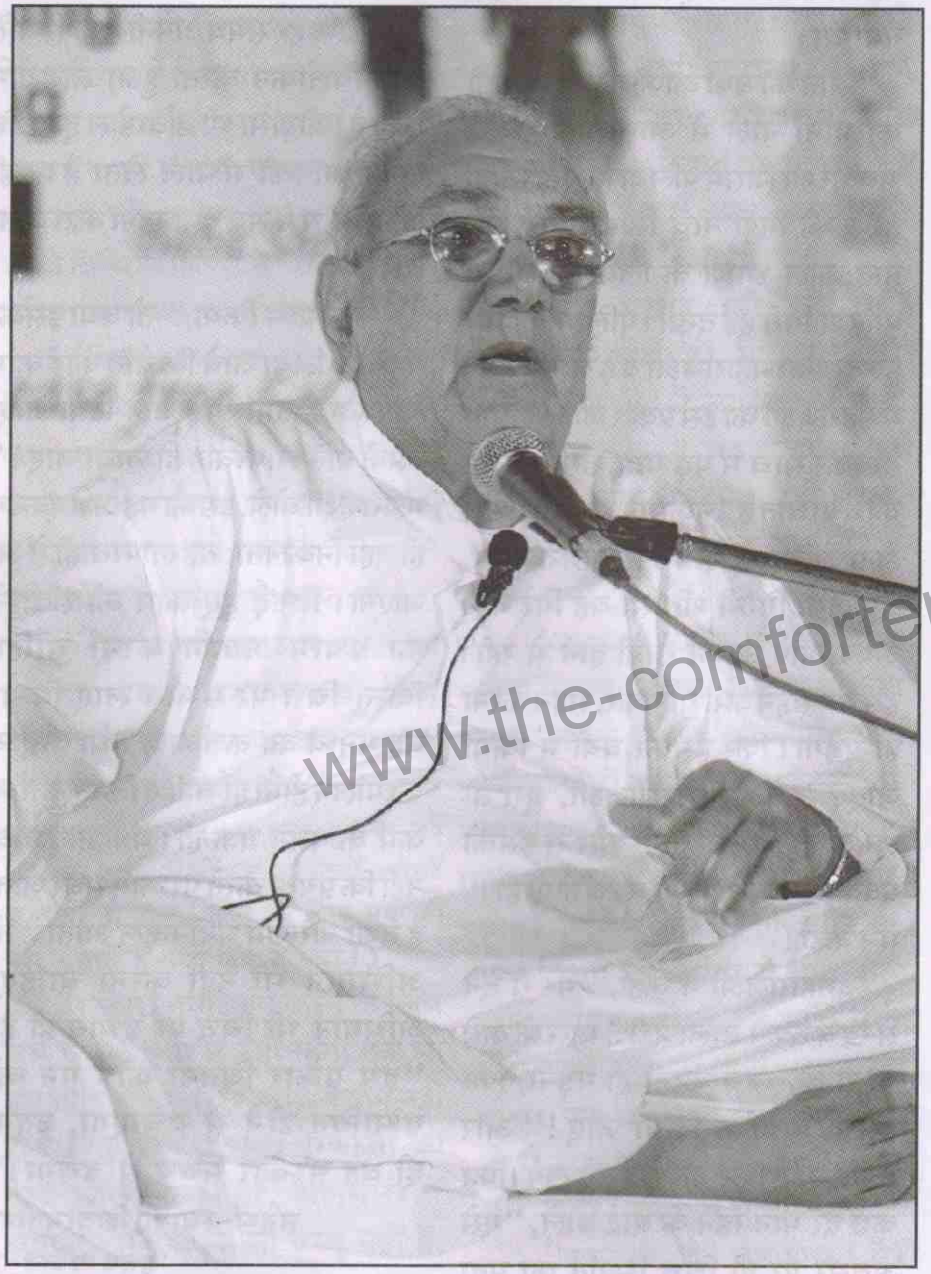

"हर युग में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही आराधना की विधि तय होती है। अब कलियुग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा देता है। कलियुग केवल नाम आधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

"हृदय मंथन"

"सारा साधन मल शुद्धि के लिए ही है, माया मल हो, आणव मल हो, अथवा कर्तृत्व-भागत्व मल हो। मल से भाव है-चित्त में जमा हो जाने वाली मलिनता। इस मल के दाग चित्त पर दिखाई देने लग जाते हैं, किन्तु धीरे-धीरे जीव यह भी भूल जाता है कि यह मल है। वह मल को अपना स्वभाव मान लेता है, उससे प्रेरित होकर, अनर्थ कर जाता है।

जब उसमें साधक वृत्ति उदय होती है, तथा उसे मल का भान होता है तो वह निर्मलता के लिए प्रयत्नशील होता है। आरंभ में उसका प्रयत्न आधा अधूरा होता है जैसे तुम ने बिना दाग छुड़ाए लोटा जल भर कर रख दिया। धीरे-धीरे गंभीरता तथा सावधानी आने लगती है, तथा निर्मलता प्रकट होने लगती है।

"मैं तुम्हें हतोत्साहित नहीं, सावधान कर रहा हूँ। अभी तुम्हारे साधन का आरंभ हुआ है। अभी यदि लापरवाही तथा असावधानी का स्वभाव विकसित हो गया तो उससे निकल पाना कठिन हो जाएगा। **सावधानी से ही असावधानी पर काबू पाया जा सकता है।** सावधानी से ही साधन की निरन्तरता बनाई जा सकती है तथा सावधानी से ही अन्तर के दाग-समक्ष प्रत्यक्ष होते हैं, अतः जितनी जल्दी तुम चेत जाओ, उतना ही तुम्हारा कल्याण है। हर क्षण बीतने के साथ आयु कुछ घट जाती है तथा जीव की असावधानी में ही बीत जाती है। गुरु होने के नाते कर्त्तव्य समझता हूँ कि तुम्हें सावधान करूँ। नहीं तो जगत् संसारियों से भरा है। किसको किसकी परवाह है?"

आश्रम के सामने दस बारह फीट गहरा एक नाला था। अब वह भी आश्रम के अन्दर ही आ चुका है तथा उसे भर कर, उसी के ऊपर स्कूल तथा मंगलभवन निर्माण हो चुके हैं। उस समय नाला, नगर तथा आश्रम के बीच होने से उस पर एक पुलिया बना दी गई थी। पुलिया क्या थी, दोनों ओर पत्थर जोड़कर गाड़ी की चेसिस ऊपर रख दी गई थी तथा ऊपर एक पतरा ठोक दिया गया था।

रात को वर्षा काफी हुई थी। टेकड़ी का पानी नाले में आता था, प्रवाह भयंकर था जिसमें पुलिया गिर गई। दोनों तरफ की मिट्टी नीचे खिसक गई थी। प्रातःकाल भ्रमण के लिये निकले तो पुलिया गिरी हुई देखी। पुलिया को गिरे हुए देखकर महाराजश्री बड़े जोर से हँसे। मैं महाराजश्री का इस प्रकार जोर से हँसना देखकर सोच में पड़ गया, इस में हँसने की क्या बात है! नुकसान हुआ तो गंभीर होना चाहिए था। जब उनसे पूछा तो बोले, "पुलिया गिरनी थी, सो वह गिर गई। अपने आप उठकर खड़ी होने से रही। हँस कर सहन करो या रोकर, सहन करना ही पड़ेगा। फिर हँसकर क्यों न किया जाए?" "किन्तु महाराजश्री, बुरा तो लगता ही है। अब दोनों ओर से इसको पक्का बनवाना पड़ेगा, खर्च होगा ही।" मैंने कहा।

महाराजश्री ने कहा, "मेरे रो देने से खर्च रुकने वाला नहीं है। हँस के करो या रो के, खर्च करना ही पड़ेगा, फिर हँस के क्यों न किया जाए!" और महाराजश्री फिर जोर से हँसने लगे। फिर कुछ देर मौन रहने के बाद बोले, "ऐसे अवसर पर ही चित्त स्थिति का पता लगता है तथा साधक की परीक्षा होती है। जरा सा कुछ काम बिगड़ गया तो चित्त उससे भी अधिक बिगड़ जाता है। कुछ थोड़ा सा भी मन के विपरीत हुआ कि मन उद्विग्न हो उठता है या थोड़ी सी भी किसी के साथ कहा-सुनी हो गई कि मन विचलित हो जाता है।

मन के इस विक्षेप से प्राप्त कुछ नहीं होता, केवल संतुलन बिगड़ जाता है। संसारी तथा साधक में यही अन्तर है। साधक हर समय अपनी मनः स्थिति का अवलोकन करता हुआ सावधान रहता है। थोड़ासा भी डाँवाडोल हुआ कि अपने आपको सँभाल लेता है। यही हानि-लाभ में सम बना रहना कहा जाता है।"

मैंने प्रश्न किया, "तो क्या इसका यह अर्थ लिया जाये कि यदि कोई काम बिगड़ता है तो बिगड़ जाने दिया जाए, उसके प्रति लापरवाह हो जाया जाए?" महाराजश्री बोले, इसका यह अर्थ एकदम ही नहीं निकलता, वह लापरवाही में आ जाएगा। **बिगड़े हुए काम को सँवारने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए किन्तु चित्त पर प्रभाव लाए बिना।** वह मनुष्य का कर्त्तव्य है तथा कर्त्तव्य का पालन होना ही चाहिए किन्तु कर्त्तव्य कर्म के करने तक ही। यह आवश्यक नहीं कि प्रयत्न करने पर काम सुधर जाता है तथा परिणाम मनोनुकूल आता है तो अभिमान भी नहीं करना चाहिए। अभिमान भी चित्त पर प्रभाव ही है। **"इस प्रकार जितना कोई मन को प्रभावित होने से बचाएगा, उतना ही वह संस्कार संचय से बचेगा।"**

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

''श्लोकों का अर्थ तुम्हें जिस रूप में समझ आये, उसी प्रकार उनकी व्याख्या करो।' मितभाषी गुरुदेव प्रायः अपने पास बैठे किसी शिष्य को यह निर्देश देते। 'मैं तुम्हारे विचारों को परिचालित करूँगा ताकि सही अर्थ तुम्हारे मुख से उच्चरित हो।' इस प्रकार लाहिड़ी महाशय की अनेक अनुभूतियों को उनके विभिन्न शिष्यों ने विस्तृत भाष्यों सहित लिपिबद्ध कर लिया।

''किसी बात पर आँख बंद कर विश्वास कर लेने की सलाह गुरुवर कभी नहीं देते थे। 'शब्द खोखले हैं,' वे कहते थे। 'ईश्वर की उपस्थिति के दृढ़ विश्वास को ध्यान में अपने परमानंदमय सम्पर्क से प्राप्त करो।'

''शिष्य की समस्या चाहे जो भी हो, उसके समाधान के लिये गुरुदेव क्रिया योग के अभ्यास का ही परापमर्श देते थे।'' (समर्थ सद्गुरुदेव सियाग भी पूरी दुनिया की असंख्य समस्याओं, दुःख-दर्दों, रोगों व नशों से मुक्त होने के लिए एक ही पथ बताते हैं-मंत्र जप व ध्यान)

'तुम्हारा मार्गदर्शन करने के लिये जब मैं इस शरीर में नहीं रहूँगा तब भी इस यौगिक कुँजी का सामर्थ्य कम नहीं होगा। यह प्रविधि भव्य प्रेरणाओं की तरह जिल्द बाँधकर, अलमारी में रखकर, भूल जाने की वस्तु नहीं हैं, क्रिया योग के माध्यम से अनवरत अपने मुक्तिपथ पर चलते जाओ। जिस (क्रिया) की शक्ति इसके अभ्यास में निहित है।'

''मैं स्वयं क्रिया को मानव के अभी तक स्वतः प्रयास द्वारा अनंत ईश्वर की खोज के लिये विकसित साधनों में सबसे अधिक प्रभावशाली मानता हूँ।'' केवलानन्दजी ने इस उत्साहपूर्ण प्रमाण के साथ अपना कथन समापन किया। **''इसके अभ्यास से सभी मनुष्यों में छिपे सर्वव्यापी ईश्वर लाहिड़ी महाशय और उनके अनेक शिष्यों की देह में प्रत्यक्ष रूप में अवस्थित प्रकट हुए।''**

ईसा मसीह की तरह एक चमत्कार लाहिड़ी महाशय द्वारा केवलानन्दजी की उपस्थित में हुआ। एक दिन उन्होंने वह कहानी मुझे सुनायी। सामने मेज पर पड़ी संस्कृत की पुस्तकों से हटी उनकी आँखें सुदूर कहीं लगी हुई थीं।

''एक दृष्टिहीन शिष्य रामू के लिये मैं करुणार्द्रता अनुभव करने लगा। क्या उसकी आँखों की ज्योति कभी लौटकर नहीं आ सकती, जब वह इतनी श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ हमारे गुरुदेव की सेवा कर रहा था, जिनमें ईश्वरत्व अपने पूर्ण तेज के साथ दीप्तिमान था? एक दिन सुबह मैं रामू से बात करना चाह रहा था, परन्तु वह शांति पूर्वक घंटों तक गुरुदेव पर पंखा झूलता रहा। अंततः जब वह कमरे से बाहर निकला तो मैं उसके पीछे हो लिया।

'रामू! तुम कब से अंधे हो?'

'जन्म से ही, महाशय! मेरी आँखों को कभी भी सूर्यदर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।'

'हमारे सर्वशक्तिमान गुरु तुम्हारी सहायता कर सकते हैं! एक बार उनसे प्रार्थना तो करो।'

''अगले दिन रामू कुछ संकोचपूर्वक लाहिड़ी महाशय की सेवा में उपस्थित हुआ, किन्तु अपने अतुल आध्यात्मिक ऐश्वर्य में शारीरिक सम्पदा को जोड़ने का अनुरोध करना उसे लगभग लज्जास्पद लग रहा था।'

'गुरुदेव! ब्रह्माण्ड को प्रकाश देनेवाला ईश्वर आप में विद्यमान है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उस की ज्योति मेरी आँखों को भी प्रदान करें ताकि मैं। सूर्य के गौण तेज को देख सकूँ।'

'रामू! किसी ने मुझे कठिन परिस्थिति में डालने की योजना बनायी है। मेरे पास किसी को स्वस्थ करने की कोई शक्ति नहीं है।'

'गुरुदेव! आपमें विराजमान अनंत ईश्वर निश्चय ही मुझे स्वस्थ कर सकते हैं।'

'यह तो सचमुच अलग बात है, रामू! ईश्वर की कोई सीमा नहीं है! वह जो तारों को चमक देता है और शरीर-कोशिकाओं में रहस्यमय प्राणशक्ति संचारित करता है, निश्चय ही वह तुम्हारे नेत्रों को भी ज्योति प्रदान कर सकता है।' तत्पश्चात् गुरुदेव ने रामू के माथे पर दोनों भौहों के बीच में स्पर्श किया।

'अपने मन को यहाँ केन्द्रित रखो और सात दिनों तक बारम्बार रामनाम का जप करो। सूर्य का वैभव तुम्हारे लिये विशेष उषाकाल का दृश्य प्रस्तुत

www.the-comforter.org

करेगा।'

''और एक सप्ताह में ठीक ऐसा ही हुआ। रामू ने प्रकृति के सुन्दर रूप को प्रथम बार देखा। सर्वज्ञ गुरुदेव ने अपने शिष्य को रामनाम जपने का आदेश दिया क्योंकि राम ही उसके इष्टदेवता थे। रामू के विश्वास ने भक्ति से जोती हुई जमीन का काम किया जिसमें गुरुदेव का स्थायी रूप से स्वस्थ कर देने वाला शक्तिशाली बीज अंकुरित हो गया।''

केवलानन्दजी ने क्षणभर मौन रहने के बाद गुरु के चरणों में एक और श्रद्धासुमन अर्पित किया।

''लाहिड़ी महाशय ने जितने भी चमत्कार किये, उन सब में एक बात स्पष्ट रूप से पता चलती थी कि उन्होंने अहं तत्त्व को कभी भी स्वयं को कारण-तत्त्व या कर्ता नहीं मानने दिया। सर्वोच्च रोग-निवारक शक्ति, अर्थात् ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण के कारण गुरुदेव उस शक्ति का अपने में से मुक्त रूप से प्रवाहित होना सुलभ बना देते थे।

''लाहिड़ी महाशय ने जिन अनेकानेक शरीरों को चमत्कारपूर्ण ढंग से स्वस्थ किया उन्हें अंततः चिताग्नि की ज्वालाओं का भक्ष्य बनना ही पड़ा। परन्तु उन्होंने लोगों के अंतर में जो आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न की, जो ईसा-समान शिष्य तैयार किये, वही उनके अजरामर चमत्कार हैं।''

मैं संस्कृत का विद्वान कभी नहीं बना, केवलानन्दजी ने मुझे उससे भी भव्य-दिव्य भाषा पढ़ा दी।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

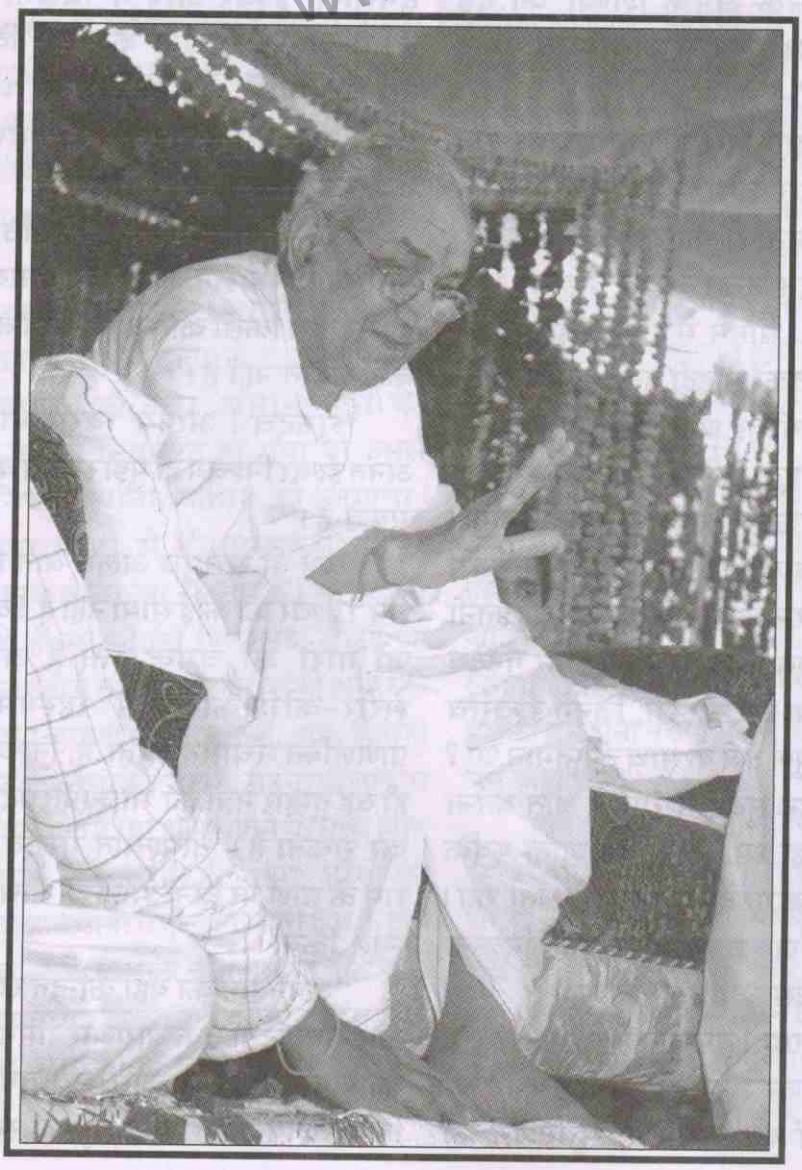

'गुरुकृपा'

''ऐसे विशाल स्वरूप में उस परमसत्ता से साक्षात्कार कराने में केवल संत सद्गुरु ही सक्षम हैं। 'गुरुकृपा' के बिना यह कार्य पूर्णरूप से असंभव है। 'गुरु', ईश्वर का ही सात्विक स्वरूप हैं। ठेट अगम से आई हुई आत्मा ही गुरुपद पर पहुँच पाती हैं। इस प्रकार के चेतन गुरु का आशीर्वाद प्राप्त होते ही जीवन में आनंद की लहरें दौड़ने लगती हैं।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-'चेतन शक्ति से जुड़े बिना, प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असंभव' शीर्षक से

"योग के आधार"

स्थिरता, शांति व समता

-श्री अरविन्द

साधना के लिये बलवान् मन, शरीर और प्राणशक्ति की आवश्यकता होती है। इस बात के लिये विशेष रूप से प्रयास करना चाहिये कि तमस् बाहर निकाल दिया जाये और प्रकृति के इस ढांचे में बल और शक्ति का संचार हो : योग का मार्ग सजीव होना चाहिये, यह कोई ऐसा मानसिक सिद्धांत या कठोरतापूर्वक निर्धारित पद्धति नहीं होना चाहिये जिससे आवश्यक परिवर्तनों को अस्वीकार करते हुए चिपके रह जाये।

किसी प्रकार विचलित न होना, शांत बने रहना और पूर्ण विश्वास बनाये रखना ही साधक के लिये समुचित मनोभाव है; पर यह भी आवश्यक है कि सद्गुरु की सहायता को ग्रहण किया जाये और किसी भी कारण से उनकी करुणा से पीछे न हटा जाये। साधक को कभी ऐसी भावनाओं को प्रश्य नहीं देना चाहिये कि मैं अयोग्य हूँ, ग्रहण करने में असमर्थ हूँ, कभी अपने दोषों और विफलताओं के विषय में बहुत अधिक सोच-विचार नहीं करना चाहिये और न उसके कारण अपने मन को दुःखित और लज्जित होने देना चाहिये; क्योंकि ये सब विचार और भाव अंत में मन में दुर्बलता ले आते हैं। अगर कठिनाइयाँ आयें, ठोकरें खानी पड़ें या विफलताएँ हों तो साधक को उन्हें धीरतापूर्वक देखना चाहिये और उन्हें दूर करने के लिये शांतिपूर्वक निरंतर भगवान् की सहायता का आह्वान करना चाहिये, पर कभी अपने को विपर्यस्त या व्यथित या निरुत्साहित नहीं होने देना चाहिये। योग का मार्ग कोई सहज मार्ग नहीं है और प्रकृति का सर्वांगीण परिवर्तन एक दिन में नहीं किया जा सकता।

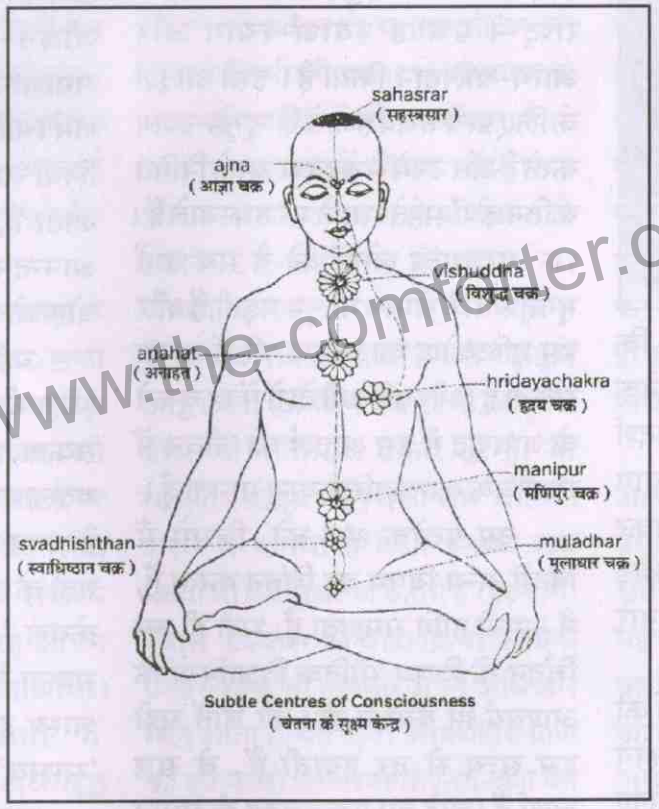

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

तुम्हारे अंदर जो अवसाद आया है और तुम्हारे प्राण के अंदर जो संघर्ष उत्पन्न हुआ है, इसका कारण निश्चय ही यह होगा कि तुम्हारे पहले के प्रयास में फल की प्राप्ति के लिये अत्यधिक उत्सुक होने तथा अतिरिक्त परिश्रम करने का दोष आ गया है - इस दोष के कारण जब तुम्हारी चेतना नीचे उतर आयी तब तुम्हारा दुःखित, हताश और उद्भ्रांत प्राण ऊपरी सतह पर आ गया और उसने प्रकृति की प्रतिकूल दिशा से आनेवाले संशय, निराशा और जड़ता के सुझावों के प्रवेश के लिये पूरी तरह से दरवाजा खोल दिया। ठीक मानसिक चेतना की तरह ही तुम्हें अपने प्राण और शरीर की चेतना में भी स्थिरता और समता का सुदृढ़ आधार स्थापित करने के लिये प्रयास करना होगा। शक्ति और आनंद का एक पूर्ण प्रवाह उतर आये, पर आप एक सुदृढ़ आधार में जो उसे धारण करने में समर्थ हो-एकमात्र पूर्ण समता ही वैसी सामर्थ्य और दृढ़ता प्रदान कर सकती है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

!! मेरे गुरुदेव !!

-स्वामी विवेकानन्द

भारत में कोई धार्मिक ग्रन्थ ऐसा नहीं है, जिसमें ये भाव प्रमुख न हों। मनुष्य को ईश्वर-प्राप्ति करनी चाहिए, ईश्वर का अनुभव करना चाहिए, ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहिए तथा उससे बातचीत करनी चाहिए, यही धर्म है। भारत का वातावरण ऐसे साधु-सन्तों की कथाओं से परिपूर्ण है, जिन्हें ईश्वर का साक्षात्कार हुआ है।

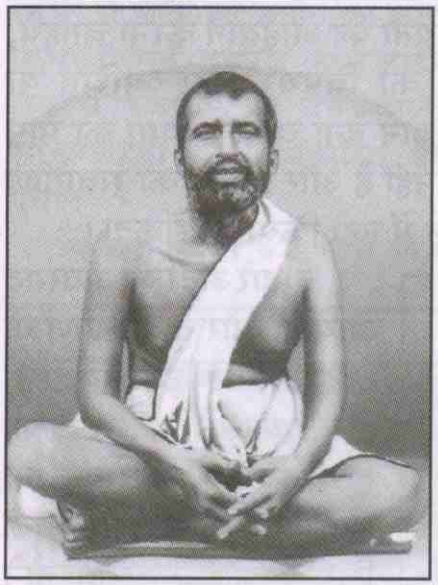

आप लोगों ने अभी सुना है कि अतीत काल से ही भारत में ऐसे अनेक महापुरुष हो गये हैं, जिन्होंने इस आदर्श के लिए अपने सब सुख-साज का त्याग कर दिया और जो गुफाओं में जाकर रहने लगे; सैकड़ों ने अपना घर-द्वार छोड़ दिया और पवित्र नदियों के किनारे अनेक यातनाएँ सही।

ये सब कष्ट केवल उस आदर्श की अनुभूति के लिए ही थे। यह सब उन्होंने न तो केवल साधारण ज्ञान के लिए किया, न बौद्धिक ज्ञान के लिए, न तत्त्व वस्तु की तर्कपूर्ण जानकारी के लिए और न अँधेरे में टटोलने के लिए ही, वरन् इस बात के लिए कि हमें अपनी इंद्रियों द्वारा यह संसार जितना प्रत्यक्ष प्रतीत होता है, उससे कहीं अधिक प्रत्यक्ष हमें सत्य का अनुभव हो जाय। उसके संबंध में, मैं अभी किसी सिद्धान्त को रखने नहीं जा रहा हूँ। मेरे कहने का अभिप्राय यही है कि केवल यही एक भाव था, जिसका असर उनके मन पर अति प्रबल रूप से पड़ा था।

इस ध्येय-साधन में हजारों मनुष्य देह त्याग करेंगे तथा उनका स्थान लेने के लिए और हजारों तैयार हो जायेंगे। अतः इसी एक भाव के हेतु हजारों वर्षों से सारे राष्ट्र ने प्रचण्ड स्वार्थ-त्याग और आत्म-बलिदान किया है। इसी आदर्श के लिए प्रत्येक वर्ष हजारों हिन्दू गृह-त्याग करते हैं और उनमें से बहुत से उसके निमित कठिनाइयाँ सहते-सहते मर तक जाते हैं।

पाश्चात्य लोगों को ये सब बातें मृगतृष्णा के समान मालूम पड़ती हैं और इस दृष्टिकोण का कारण भी मैं समझ सकता हूँ। और पश्चिमी देशों में रह चुकने के बावजूद मैं इस आदर्श को जीवन में सर्वाधिक व्यावहारिक वस्तु मानता हूँ।

उस प्रत्येक क्षण को, जिसमें मैं किसी अन्य विषय का चिंतन करता हूँ, मैं अपनी हानि समझता हूँ; भले ही उस चिंतन के विषय भौतिक विज्ञानियों के आश्चर्य ही क्यों न हों। **जो बातें मुझे इस सत्य से दूर हटाती हैं, वे सब व्यर्थ हैं।** चाहे तुम एक देवदूत के समान ज्ञानी हो अथवा एक पशु के समान अज्ञानी हो, प्रत्येक दशा में यह जीवन क्षणभंगुर है; चाहे तुम एक फटे-पुराने कपड़ों वाले मनुष्य के समान निर्धन हो अथवा तुम्हारे पास धनकुबेर की सम्पति हो तो भी जीवन क्षणभंगुर है; **चाहे रास्ते में भटकनेवाले किसी साधारण मनुष्य के समान तुम्हारी दुर्दशा हुई हो अथवा तुम करोड़ों पर राज्य करनेवाले सम्राट् हो, परन्तु जीवन क्षणभंगुर ही है;** चाहे तुम अत्यन्त स्वस्थ अथवा दुर्बल से भी दुर्बल हो, तिस पर भी जीवन क्षणभंगुर ही है; और चाहे तुम्हारा स्वभाव अत्यन्त काव्यमय हो अथवा क्रूर हो, जीवन प्रत्येक दशा में क्षणभंगुर ही है। **हिन्दुओं के अनुसार जीवन-समस्या का एक ही समाधान है और वह है--ईश्वर तथा धर्म।** यदि ईश्वर और धर्म को सत्य मान लिया जाय तो जीवन का अर्थ स्पष्ट हो जाता है, जीवन निबाहने योग्य तथा आनन्दमय हो जाता है, और नहीं तो वह बोझ के सदृश ही रहता है।

यही हमारा भाव है, किन्तु कितना भी तर्क करके उसे सिद्ध नहीं किया जा सकता, उससे अधिक से अधिक यही बतलाया जा सकता है कि यह सम्भव है। ज्ञान के किसी क्षेत्र में उच्च से उच्च तर्क के द्वारा किसी वस्तु का अस्तित्व केवल **'सम्भव'** ही सिद्ध किया जा सकता है, इससे अधिक नहीं। भौतिक शास्त्र द्वारा स्थापित अनेक सिद्धान्त 'सम्भव' ही कहे जा सकते हैं, तथ्य नहीं।

तथ्य केवल ज्ञानेन्द्रियों के विषय होते हैं और तथ्यों की प्रत्यक्ष उपलब्धि आवश्यक है। इसी प्रकार **'धर्म'** और **'ईश्वर'** को सत्य मानने के लिए हमें उनका प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहिए। स्वयं का अनुभव ही हमें इन बातों की सत्यता सिद्ध करा सकता हैं-तर्क-वितर्क अथवा अन्य कोई चीज नहीं।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

हठयोग

यह कार्य श्वास-क्रिया के विविध प्रकार के नियन्त्रणों से सम्पन्न किया जाता है जिनमें से सर्वप्रथम है-**रेचक** और **पूरक** की समानता।

यह नियन्त्रण आगे बढ़ता हुआ इन दोनों के अत्यन्त तालबद्ध नियन्त्रणों का रूप धारण कर लेता है, जिनमें रेचक और पूरक के बीच कुछ काल के लिये प्राण का **कूम्भक** भी किया जाता है। शुरू-शुरू में प्राण का कुंभक करने (इसे अपने अन्दर रोके रखने) के लिये कुछ प्रयत्न करना पड़ता है, पर अन्त में यह और इसकी समाप्ति दोनों उतने ही सुगम हो जाते हैं और उतने ही स्वाभाविक प्रतीत होते हैं जितने कि श्वास का बारम्बार अन्दर लेना एवं बाहर फेंकना जो कि प्राण का साधारण व्यापार है।

परन्तु प्राणायाम के प्रमुख लक्ष्य ये हैं-स्नायुसंस्थान को शुद्ध करता, सभी स्नायुओं में बिना किसी रुकावट, गड़बड़ी या अनियमितता के प्राणशक्ति को संचारित करना और इसकी क्रियाओं पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त करना ताकि देहस्थित आत्मा का मन और संकल्प न तो देह या प्राण के अधीन रहे और न इन दोनों की सम्मिलित संकीर्णताओं के।

प्राण के इन व्यायामों में स्नायुमण्डल की शुद्ध और अव्याहृत स्थिति को लाने की जो शक्ति है, वह हमारे **शरीर-क्रिया** विज्ञान का प्रसिद्ध और सुप्रतिष्ठित तथ्य है।

प्राणायाम की शक्ति **देह-संस्थान** को स्वच्छ करने में भी सहायता पहुँचाती है, परंन्तु आरम्भ में यह उसके सब मार्गों और प्रणालिओं को शुद्ध करने में पूर्ण रूप से प्रभावशाली नहीं सिद्ध होती; अतएव हठयोग उनमें जमा हुई सब प्रकार की मलिनताओं को नियमपूर्वक साफ करने के लिये परिपूरक के रूप में स्थूल विधियों का भी प्रयोग करता है। आसन और प्राणायाम के साथ मिलकर ये विधियाँ-विशेष प्रकार के आसनों के परिणामस्वरूप विशेष प्रकार की व्याधियाँ भी मिट जाती हैं,-शरीर के स्वास्थ्य को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखती हैं। परन्तु मुख्य लाभ यह होता है कि इस शुद्धता के कारण **प्राण-शक्ति** को कहीं भी, शरीर के किसी भी भाग में और किसी भी प्रकार से या उसकी अपनी गति के किसी भी प्रकार के लयताल के साथ परिचालित किया जा सकता है।

फेफड़ों में केवल सांस भरने और उनसे बाहर निकालने की क्रिया तो हमारे देह-संस्थान में **प्राण** या जीवन-श्वास की एक ऐसी अत्यन्त गोचर एवं गतिमात्र है जो हमारी पकड़ में आ सकती है। **योग-विद्या** के अनुसार प्राण की गति पाँच प्रकार की है, जो सम्पूर्ण **स्नायुमण्डल** तथा सारे भौतिक शरीर में व्याप्त है तथा इसकी सब क्रियाओं का निर्धारण करती है। हठयोगी श्वास-प्रश्वास की बाह्य क्रिया को एक प्रकार की कुँजी मानकर अपने अधिकार में ले आता है; यह कुँजी उसके लिये प्राण की इन पाँचों शक्तियों के नियन्त्रण का द्वार खोल देती है। वह इनकी आन्तरिक क्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप में जान लेता है, अपने सारे शारीरिक जीवन और कार्य से मानसिक रूप में सचेतन हो जाता है। वह अपने देह संस्थान की सभी नाड़ियों या स्नायु-प्रणालियों में से प्राण का संचालन करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। वह **छह चक्रों** में अर्थात् स्नायुमण्डल के छह स्नायुग्रन्थिमय केन्द्रों में होनेवाली प्राण की क्रिया को जान जाता है, और इनमें से प्रत्येक में वह इसे इसकी वर्तमान सीमित, अभ्यस्त और यान्त्रिक क्रियाओं से परे उन्मुक्त कर देने में समर्थ होता है। संक्षेप में, वह शरीरगत प्राण के अत्यन्त सूक्ष्म स्नायविक तथा स्थूलतम भौतिक रूपों पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त कर लेता है, यहाँ तक कि इसके अन्दर के उस तत्त्व को भी अपने नियन्त्रण में प्राप्त कर लेता है, जो इस समय हमारी इच्छा के अधीन नहीं है तथा हमारे **दृष्टास्वरूप चैतन्य** और संकल्प की पहुँच के बाहर है। इस प्रकार शरीर और प्राण दोनों की क्रियाओं की शुद्धि के आधार पर, हमें इन दोनों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है तथा हम उनका स्वतन्त्र और प्रभावपूर्ण उपयोग करने लगते हैं, यह प्रभुत्व एवं उपयोग ही हठयोग के उच्चतर लक्ष्यों के लिये नींव का काम करते हैं।

परन्तु ये सब प्राप्तियाँ अभी केवल आधार ही है, अर्थात् ये हठयोग के द्वारा प्रयुक्त दो यन्त्रों की बाह्य और आंतर भौतिक अवस्थाएँ मात्र हैं। पर अधिक महत्त्वपूर्ण विषय तो अभी रहता ही है, वह है उन आन्तरात्मिक एवं आध्यात्मिक परिणामों का विषय जिनके लिये इन अवस्थाओं का उपयोग किया जा सकता है। यह उपयोग शरीर और मन-आत्मा के तथा **स्थूल** और **सूक्ष्म** शरीर के उस संबंध पर निर्भर करता है जिस पर हठयोग की प्रणाली आधारित है। यहाँ यह राजयोग की सीध में पहुँच जाती है, और एक ऐसा बिन्दु आ जाता है जिस पर पहुँचकर एक से दूसरी प्रणाली में पग रखा जा सकता है। **-समाप्त**

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

www.the-comforter.org

कहानी...

सही राह

शाम का समय था। पक्षी अपने-अपने घोंसले की ओर लौट रहे थे, पर वह बढ़ा जा रहा था। बिना किसी थकान और पछतावे के। उसे अपनी **मंजिल** तक पहुँचना ही था। यही उसके **पिता की आज्ञा** थी। उसका लक्ष्य थी यमपुरी। वही यमपुरी, जहाँ यमराज निवास करते थे। उसे यमराज से ही मिलना था। यही उसके पिता का आदेश था।

लगातार तीन पहर तक चलने के बाद वह यमपुरी के द्वार पर जा पहुँचा। वहाँ पर दो यमदूत पहरा दे रहे थे। उन्होंने जब उस बालक को देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। कौन है यह बालक, जो मौत के मुँह में चला आया? दोनों सोचने लगे। उसमें से एक यमदूत ने गरजती आवाज में उससे पूछा, 'हे बालक, तू कौन है और यहाँ क्या करने आया है?'

'मेरा नाम **नचिकेता** है और मैं अपने पिता की आज्ञा से यमराजजी के पास आया हूँ।' उस बालक ने धीरता के साथ उत्तर दिया।

'लेकिन क्यों मिलना चाहते हो तुम यमराज से?' दूसरे यमदूत ने प्रश्न किया।

'क्योंकि मेरे पिताश्री ने उन्हें मेरा दान कर दिया है।'

नचिकेता की बात सुनकर दोनों यमदूत हैरान रह गए। ये कैसा अजीब बालक है। इसे मृत्यु का भय नहीं, यमराज से मिलने चला आया। उन्होंने उसे डराना चाहा पर नचिकेता अपने निर्णय के आगे **सूई की नोंक भर** भी न डिगा। वह बराबर यमराज से मिलने की इच्छा प्रकट करता रहा। इस पर एक यमदूत बोला- 'वे इस समय यमपुरी में नहीं हैं। तीन दिन बाद लौटेंगे, तभी तुम आना।'

'कोई बात नहीं, तीन दिन तक प्रतीक्षा कर लूँगा।' नचिकेता ने उत्तर दिया और वहीं द्वार के पास बैठ गया। सहसा उसकी आँखों के आगे बीती हुई एक-एक घटना चित्र की भांति घूमने लगी।

नचिकेता के पिता वाजश्रवा ने एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया था। विद्वानों, ऋषि-मुनियों और ब्राह्मणों को उसने यज्ञ में आमंत्रित किया था। ब्राह्मणों को आशा थी कि यज्ञ की समाप्ति पर वाजश्रवा की ओर से उन्हें अच्छी दक्षिणा मिलेगी, लेकिन जब यज्ञ समाप्त हुआ, वाजश्रवा ने दक्षिणा देनी शुरू की तो सभी आश्चर्यचकित रह गए। दक्षिणा में वह उन गायों को दे रहा था, जो कि बूढ़ी हो चुकी थीं और दूध भी न देती थीं।

यज्ञ के प्रारम्भ से पूर्व वाजश्रवा ने घोषणा की थी कि वह यज्ञ में अपनी समस्त सम्पति दान कर देगा। इसी कारण यज्ञ में कुछ ज्यादा ही लोग उपस्थित हुए थे। पर जब उन्होंने दान का स्तर देखा तो मन ही मन नाराज होकर रह गए। क्रोध तो उन्हें बहुत आया पर उनमें से कोई कुछ न कह सका।

वाजश्रवा के पुत्र नचिकेता से यह न देखा गया। सम्पति के प्रति अपने पिता का यह मोह उसे बर्दाश्त न हुआ। वह अपने पिता के पास जाकर बोला--'पिताजी, यह आप क्या कर रहे हैं?'

'देखते नहीं हो, ब्राह्मणों को दान दे रहा हूँ। वाजश्रवा ने कहा।

'लेकिन ये गायें तो बूढ़ी हैं, जबकि आपको अच्छी गायें दान में देनी चाहिए।' नचिकेता ने विनम्रतापूर्वक कहा।

'क्या तुम मुझसे ज्यादा जानते हो कि कौन सी चीज दान में देनी चाहिए, कौन सी नहीं?' वाजश्रवा ने झल्लाकर प्रश्न किया।

'हां पिताजी।' नचिकेता ने कहा-- 'दान में वही वस्तु दी जानी चाहिए जो व्यक्ति को सबसे ज्यादा प्रिय हो और सबसे प्रिय तो आपका मैं हूँ, आप मुझे किसी को दान में दें?' नचिकेता की इस बात का वाजश्रवा ने कोई उत्तर न दिया, पर नचिकेता ने हठ पकड़ ली। वह बार-बार यही प्रश्न करता रहा कि पिताजी आप मुझे किसको दान में दें? काफी देर तक वाजश्रवा देखता रहा, पर जब नचिकेता न माना तो वह झल्लाकर बोला, **'जा, मैंने तुझे यमराज को दान में दिया।'** लेकिन अगले ही पल वाजश्रवा ठिठका। ये उसने क्या कह दिया? अपने इकलौते पुत्र को यमराज को दान में दिया? पर अब क्या हो सकता था?

नचिकेता बोल पड़ा- 'मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा पिताजी? आप बिलकुल चिंतित न हों।'

वाजश्रवा ने बहुत समझाया पर नचिकेता न माना। उसने सभी परिजनों से अंतिम भेंट की और यमराज से मिलने के लिए चल पड़ा। जिसने भी यह सुना आश्चर्यचकित हुए बिना न

www.the-comforter.org

रह सका। सभी उसके साहस की प्रशंसा करने लगे।

यमपूरी के द्वार पर बैठा नचिकेता बीती बातें सोच रहा था। उसे इस बात का संतोष था कि वह पिता की आज्ञा का पालन कर रहा था। लगातार तीन दिन तक वह यमपूरी के बाहर बैठा यमराज की प्रतीक्षा करता रहा था। तीसरे दिन जब यमराज आए तो वे नचिकेता को देखकर चौंके।

जब उन्हें उसके बारे में मालूम हुआ तो वे भी आश्चर्यचकित रह गए। अन्त में उन्होंने नचिकेता को अपने कक्ष में बुलावा भेजा।

यमराज के कक्ष में पहुँचते ही नचिकेता ने उन्हें प्रणाम किया। उस समय उसके चेहरे पर **अपूर्व तेज** था। उसे देखकर यमराज बोले-'वत्स, मैं तुम्हारी **पितृ भक्ति** और **दृढ़ निश्चय** से बहुत प्रसन्न हुआ। तुम मुझसे कोई भी वरदान माँग सकते हो।'

यह सुनकर नचिकेता की प्रसन्नता की सीमा न रही। वह बोला- **'पहला वरदान तो यह दें कि मेरे पिता का क्रोध शांत हो जाएं और वे मुझे पहले की तरह प्यार करें।'**

'ऐसा ही होगा।'

यमराज बोले- 'दूसरा माँगों।' किन्तु इस बार नचिकेता सोच में पड़ गया। अब वह क्या मांगे। उसे तो किसी चीज की इच्छा ही नहीं थी।

अचानक उसे ध्यान आया कि मेरे पिता ने यज्ञ स्वर्ग की प्राप्ति के लिए किया था। क्यों न मैं ही उसे माँगूं?' यह सोचकर वह बोला- 'मुझे स्वर्ग की प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है?'

यमराज चक्कर में पड़ गए। पर वचन दे चुके थे। इसलिए उन्होंने वह भी बता दिया और तीसरा व अन्तिम वरदान के लिए कहा। नचिकेता कुछ समय तक सोच में डूबा रहा।

फिर बोला- **'आत्मा का रहस्य'** क्या है? कृपया समझाएं।'

नचिकेता के इस प्रश्न की आशा यमराज को बिलकुल न थी। उन्होंने उसे और कोई वरदान माँगने को कहा और बोले- **'यह विषय इतना गूढ़ है कि हर कोई इसे नहीं समझ सकता।'** पर नचिकेता अपनी बात पर अड़ा रहा और निर्णायक स्वर में बोला- 'अगर आपको कुछ देना ही है तो मेरे इस प्रश्न का उत्तर दें अन्यथा रहने दें। क्योंकि मुझे अन्य कोई भी वस्तु नही चाहिए।'

वे उसे आशीर्वाद देते हुए बोले- 'वत्स, ये ऐसा रहस्य है जो मैं भी नहीं जानता। पर यदि तुम ज्ञान प्राप्त करो और विद्या अध्ययन करो तो तुम्हें सिर्फ इसी प्रश्न का ही नहीं बल्कि संसार के सभी प्रश्नों का उत्तर प्राप्त हो सकता है। क्योंकि **विद्या** वह खाजाना है, जिसकी बराबरी संसार की कोई वस्तु नहीं कर सकती।'

उसके बाद यमराज ने नचिकेता को आशीर्वाद देकर उसे उसके पिता के पास वापस भेज दिया।

वहाँ से लौटने के बाद नचिकेता अध्ययन में लग गया। क्योंकि जीवन की **सही राह** उसे प्राप्त हो चुकी थी। उसी राह पर चलकर वह एक बहुत बड़ा विद्वान बना और सारे संसार में उसका नाम अमर हो गया।

समर्थ सद्गुरुदेव ने मनुष्य मात्र को एक सत्य का पथ बताया है, उस पर चलकर भवसागर पार उतरने का विधान है-**'सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में सुना हुआ संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित ध्यान।'**

www.the-comforter.org

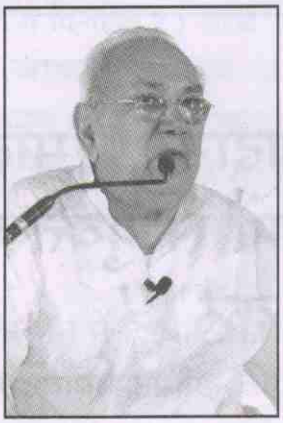

अहैतुकी कृपा

''ऐसी अहैतुकी कृपा से मिली दौलत ही, मैं संसार में बाँटने निकल पड़ा हूँ। मेरा इसमें कुछ भी नहीं हैं। मैं तो मात्र उस परमात्मा का सेवक हूँ। मैं तो सेवा के बदले मजदूरी मात्र का अधिकारी हूँ।

जो कुछ बाँट रहा हूँ, उस धन पर मेरा रत्ति भर भी अधिकार नहीं है।''

27 फरवरी 1988

सद्गुरुदेव की पावन शरण

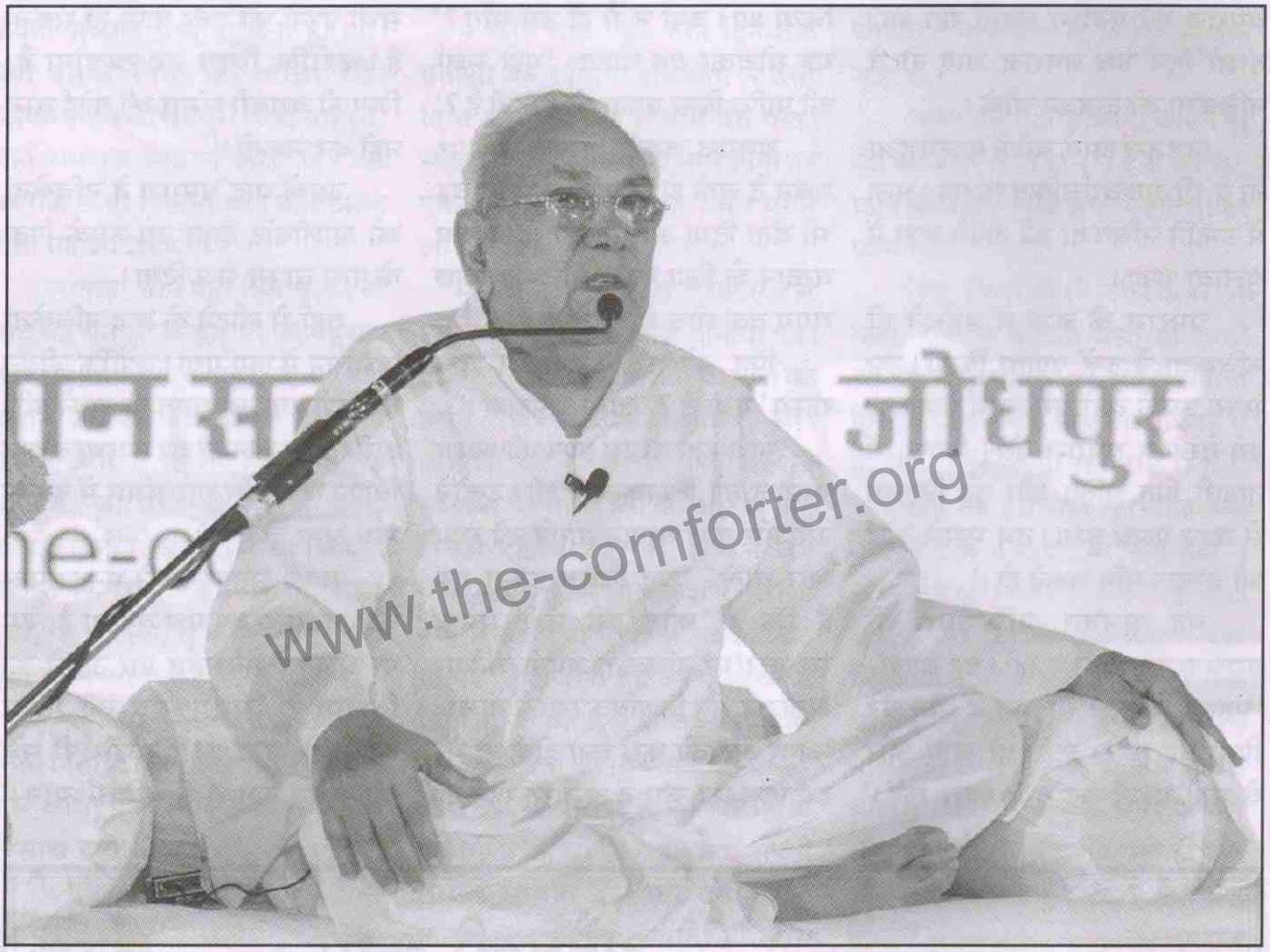

www.the-comforter.org

"सब धर्मों को त्यागकर केवल एक मुझ सच्चिदानंद परमात्मा की ही शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दुँगा, मैं यह दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ। तू शोक मत कर !"

-श्रीमद् भागवद् गीता

AVSK जोधपुर शाखा कोटा द्वारा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन।

♦ 25-2-2018 : सूर्यनगर डकनिया स्टेशन, कोटा ♦ 11-3-2018 : मोतीनगर बोरखेड़ा, कोटा ♦ 15-3-2018 : नाकोड़ा कॉलोनी, बारां

आदर्श नगर, गुमानपुरा (कोटा) में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (18 फरवरी 2018)

www.uscomforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा बालेसर में सिद्धयोग शिविर व सद्गुरुदेव की मूर्ति का अनावरण। (15 मार्च 2018)

www.thecosmicmind.org

जोधपुर में राजस्थान पत्रिका के आयेजित ''हमराह हेल्थ केयर'' कार्यक्रम में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन कर सैकड़ों जिज्ञासुओं को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (18, 25 फरवरी 2018 तथा 4 व 11 मार्च 2018)

समर्थ सद्गुरुदेव की प्राप्ति

दमा की बीमारी से लड़ने में सिद्धयोग से ताकत मिली, वृद्धावस्था में भी मैं निराश नहीं हूँ, मुझे सद्गुरुदेव भगवान् का सहारा है।

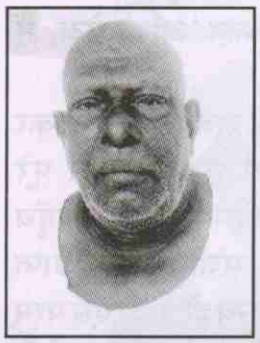

मैं जी. डी. हाटेकर, तह. डोंगरगढ़, जिला:- राजनंदगाँव, छत्तीसगढ का रहने वाला हूँ।

मैं वर्ष 2010 तक श्वास दमा की बीमारी से ग्रसित था। वर्ष 2010 में टी. वी. पर परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का सिद्धयोग दर्शन का प्रवचन सुनता रहा। इससे मेरे मन में सद्गुरुदेव से मिलने की तीव्र इच्छा प्रकट हुई। मैं जून 2010 में ही डोंगरगढ़ से जोधपुर, गुरुदेव से मिलने पहुँचा। आश्रम में पहुँचकर गुरुदेव के दर्शन किये। मेरी आत्मा को सुखद आध्यात्मिक अनुभव हुआ। उसी दिन से मुझे श्वास दमा की बीमारी में आराम मिला। अब मुझे सद्गुरुदेव के प्रति बहुत प्रेम है।

मैं अकेला ही प्रतिवर्ष गुरु पूर्णिमा को गुरुदर्शन करने के लिए जोधपुर आश्रम जाता हूँ। मुझे ध्यान के दौरान गुरुदेव के दर्शन हुए। मुझे आन्तरिक तीव्र प्रेरणा होती है, तब मैं जोधपुर आश्रम जाता हूँ। इस बार मैं सद्गुरुदेव के अवतरण दिवस पर जोधपुर आश्रम नहीं आया था इसलिए मुझे आश्रम आने की तड़फ थी। आज दिनांक 7 मार्च 2018 को मैंने जोधपुर आश्रम आकर उनके आसन पर नमन् किया। मेरी आत्मा को बेहद प्रसन्नता मिली।

मेरी वृद्धावस्था में भी मुझे अन्तर्मन से प्रेरणा मिलती है और मैं प्रसार-प्रचार कार्य भी करता हूँ। परम पूजनीय गुरुदेव के श्री चरणों में मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

जी डी हाटेकर उम्र-72 वर्ष
डोंगरगढ़,
जिला-राजनंद गाँव
छत्तीसगढ़

तंद्रावस्था द्वारा

सिर से बड़ा बोझ हटा

आज दिनांक 21 मार्च 2018 को मैं जोधपुर आश्रम आया। लम्बे समय से नहीं आ पाया था। मेरा बेटा बीमार रहता है तो उसके दवाई लेने के लिए जोधपुर आया था।

फिर मन में विचार आया कि जोधपुर तो आया ही हूँ तो क्यों नहीं, गुरुदेव के आश्रम जाकर आ जाऊ !

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरे सिर पर बहुत बड़ा बोझ है जो मैं ढोह रहा हूँ। मन बड़ा अशांत था। मैंने सद्गुरुदेव के आसन पर माथा टेका और 15 मिनट ध्यान करने बैठ गया।

मुझे नहीं पता कब मेरा गहरा ध्यान लगा और ध्यान के दौरान ही तंद्रा अवस्था में चला गया। इस तंद्रा से मेरा बोझ हल्का हो गया। मन में असीम शांति और आनंद छा गया।

गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन में अद्भुत शक्ति है।

मैं सद्गुरुदेव के पावन श्री चरण कमलों में बारंबार नमन् करता हूँ।

-जसराज गहलोत
बालोतरा,
जिला-बाड़मेर

www.the-comforter.org

असहनीय पेट दर्द से मुक्ति

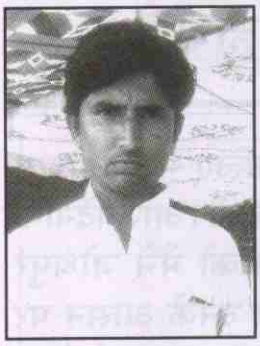

सर्वप्रथम गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

एक दिन अचानक मेरे पेट में दर्द होने लगा। उस दर्द ने बढ़ते-बढ़ते ऐसा गंभीर रूप धारण कर लिया कि मुझसे सहन भी नहीं किया जा रहा था। डॉक्टर को दिखाया व दवाईयाँ ली, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। फिर मैंने सोनोग्राफी करवाई तो मालूम हुआ कि फेफड़ों में पानी भरा हुआ बताया गया।

बाद में डॉक्टरों ने फेफडों से एक लीटर पानी बाहर निकाला, थोड़े दिन कुछ आराम मिला, फिर वैसा ही दर्द वापस होने लगा। दर्द 2013 से 2015 तक लगातार जारी रहा, लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं मिला। रूपये लगा-लगाकर थक गया था, कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ? अब मैं मानसिक व शारीरिक, दोनो तरह से बिल्कुल थक गया था। दिमाग में डिप्रेशन रहने लगा, हर समय असहनीय दर्द रहता था। जिंदगी से पूरी तरह से परेशान हो गया था।

नवम्बर 2015 में पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी का पोस्टर मिला, उसको पढ़ा, उसमें लिखा था कि गुरुदेव द्वारा बताये हुए ''संजीवनी मंत्र'' का सघन जाप व गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान करने से असाध्य बीमारियों से निजात पायी जा सकती है।

मैंने उसी दिन से गुरुदेव के फोटो को सामने रख कर ध्यान किया तो पहले ही दिन दर्द से कुछ राहत मिली, बचने की आशा बढ़ी तथा मात्र सात दिन में पूर्ण रूप से रोग मुक्त हो गया। ऐसे लगने लगा, जैसे कभी दर्द था ही नहीं। अब गुरुदेव के दर्शन और मंत्र दीक्षा लेने की जिज्ञासा बढ़ी तो गुरुदेव ने ध्यान में मुझे आदेश दिया और जोधपुर आश्रम के बारे में भीयाड़ से जोधपुर आश्रम तक के पूरे रास्ते के बारे में बताया और कहा 'आजा बेटा, मैं यहाँ बैठा हूँ'।

मैं उसी दिन सुबह जल्दी उठकर आश्रम के लिये तैयार होकर पूरे परिवार सहित जोधपुर आश्रम पहुँच गया। गुरुदेव से 'संजीवनी मंत्र' प्राप्त कर मेरा जीवन धन्य हो गया, ऐसे परम् दयालु सद्गुरुदेव को कोटि-कोटि नमन्।

मेरा सभी गुरु भाई-बहनों से निवेदन है कि किसी भी प्रकार की समस्या या बीमारी से निजात पाने के लिये सद्गुरुदेव द्वारा बताए हुए 'संजीवनी मंत्र' को बिना होठ व जीभ हिलाए सघन जाप व नियमित ध्यान करें, कुछ ही समय में पूर्ण रोग मुक्त हो जाओगे।

- किशनाराम देवपाल
गांव- भींयाड़,जिला-बाड़मेर

www.the-comforter.org

वृत्ति परिवर्तन

सद्गुरुदेव द्वारा बताए गए नाम (मंत्र) के सघन जप व नियमित ध्यान द्वारा कुण्डलिनी जागरण से साधक की वृत्ति में स्वतः ही परिवर्तन आ जाता है। उसे छोड़ना नहीं पड़ता है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में अपने भाषण में कहा था-''मनुष्य उन वस्तुओं को नहीं छोड़ता, वे वस्तुएँ उसे छोड़कर चली जाती हैं।'' (You need not to give up the things, the things will give up you .)

ऋषिकेश में अन्तर्राष्ट्रीय योग महोत्सव-2018
में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग प्रदर्शनी

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा ऋषिकेश में 7 दिवसीय ध्यान योग शिविर 1 से 7 मार्च 2018 तक राम झूला पर आयोजित किया गया। इसकी शुरूआत अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर के द्वारा उत्तराखंड सरकार द्वारा गंगा रिसोर्ट में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव 2018 से हुई। प्रातः काल हुए इस कार्यक्रम में 150 के करीब जिज्ञासुओं को ध्यान करवाया गया।

इनमें ऋषिकेश एवं हरिद्वार के आसपास के योग स्कूलों के छात्रों और अन्य जिज्ञासु लोगों को इसकी जानकारी दी गयी। इसके पश्चात राम झूला पर आश्रम की तरफ से लगाए गए विशेष कैम्प में ध्यान योग शिविर की विधिवत शुरुआत गुरुदेव की पूजा अर्चना के साथ की गई।

सात दिवसीय इस शिविर में देश -विदेश के विभिन्न आयु वर्ग के जिज्ञासुओं को गुरुदेव के इस अद्भुत दर्शन की जानकारी दी गई। इस शिविर में उत्तराखंड के विभिन्न योग कॉलेज के बच्चों को पतंजलि योग दर्शन पर आधारित इस योग की जानकारी दी गई एवं गुरुदेव का ध्यान करवाया गया।

चूंकि ये योग शिविर विशेषतः पश्चिमी जगत् के लोगों को गुरुदेव का दिव्य संदेश देने के लिए आयोजित किया गया था, अतः इस बार भी काफी संख्या में विदेशी मेहमानों को गुरुदेव के बारे में जानकारी दी गयी। इस बार चीन, इजराइल, ब्राजील एवं फ्रांस से काफी संख्या में विदेशी मेहमान आये।

इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण अनुभव फ्रांस से आई हुई साधिका का रहा। जूली नामक ये साधिका बाहर लगे बोर्ड पर शक्तिपात शब्द को देख कर आई। इन साधिका के साथ अन्य व्यक्तियों का समूह भी था। इन्होंने सर्वप्रथम गुरुदेव के दर्शन की जानकारी ली, तत्पश्चात इन्होंने ध्यान किया। ध्यान में बैठते ही इस समूह को योग होने लगा।

इनमें से एक साधिका ने योग को हठ पूर्वक रोक लिया, समय पूरा होने पर इनके प्रश्न का उत्तर मिला तो इन्होंने पुनः ध्यान लगाया, जिसमें उन्हें शीर्षासन लग गया।

इसी प्रकार से इजराइल से आये लोगों ने गुरुदेव की इजराइल यात्रा व गुरुदेव के इजराइल से संबंध पर आश्चर्य व्यक्त किया। कमोबेश सभी विदेशी साधकों को गुरुदेव के ध्यान से शांति का अनुभव हुआ।

-जितेन्द्र सिंह पंवार
जोधपुर

www.the-comforter.org

सिद्धयोग शिविरों का आयोजन

जोधपुर आश्रम से सिद्धयोग दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए गई टीम ने दिनांक 1 से 23 फरवरी 2018 तक राजस्थान के कई जिलों के विद्यालयों व कस्बों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर हजारों विद्यार्थियों, शिक्षकों व ग्रामीणों को सिद्धयोग दर्शन से रूबरू कराया गया। जिसका सविस्तार वर्णन नीचे दिया जा रहा है।

अजमेर के विजयनगर में शक्तिपात-दीक्षा कार्यक्रम दिनांक 01.02.2018 से 02.02.2018 तक

अजमेर जिले की विजयनगर तहसील में सात विभिन्न स्कूलों कॉलेजों में सद्गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनाकर गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान करवाया गया व सिद्धयोग सामग्री-किताबें, पेम्पलेट व कार्ड बांटे गये।

भीलवाड़ा (राजस्थान) के गुलाबपुरा तहसील में दिनांक 03.02.2018 को पाँच विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में गुरुदेव की दिव्य वाणी में ''मंत्र'' सुनाकर गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करवाया गया व सिद्धयोग की सामग्री बाँटी गई।

ब्यावर में शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम दिनांक 4 से 6 फरवरी 2018

उपकारागृह ब्यावर, कंचन देवी उ.मा.वि. अंग्रजी माध्यम ब्यावर, सनातन कर्म उ.मा. विद्यालय-ब्यावर, माण्डेला मा. विद्यालय, अतीत मंडल उ. मा. विद्यालय, गुरुकुल विद्यालय ब्यावर आदि।

दिनांक 06.02.2018 को राजसमंद जिले के कूकड़ा ग्राम में रा.उ.मा. विद्यालय में बच्चों को गुरुदेव की दिव्य वाणी में ''मंत्र'' सुनाकर गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान करवाया व सिद्धयोग सामग्री- पेम्पलेट, कार्ड व किताबें बाँटी।

दिनांक 07.02.2018 को दादा गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी की जन्म स्थली पाली जिले के 'सीरमा', ग्राम पंचायत- कोट किराना में एक उ.मा. विद्यालय कोट किराना, उ.मा. विद्यालय -सीरमा व उ.प्रा. विद्यालय घोटी में सद्गुरुदेव की वाणी में मंत्र सुनाया व गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करवाया। तथा शाम को 8:00 बजे सीरमा के मुख्य चौक में प्रोजेक्टर पर गुरुदेव की फिल्म बताई तथा सिद्धयोग की सामग्री देकर ''मंत्र'' सुनाया व ध्यान करवाया गया। तथा सभी ग्राम वासियों को दादा गुरुदेव के बारे में पूर्ण जानकारी दी गई कि वे भगवान् ''शिव'' के अवतार थे।

बांदीकुई में सिद्धयोग कार्यक्रम

दिनांक 08.02.2018 को बांदी कुई में श्री लोकेश सैनी के गृह प्रवेश कार्यक्रम में शाम को 8:00 बजे प्रोजेक्टर पर गुरुदेव की फिल्म दिखाई गई व ''मंत्र'' सुनाकर ध्यान करवाया गया व सिद्धयोग सामग्री बाँटी गई। दूसरे दिन 09.02.2018 को मा. विद्यालय गुढ़ा में कार्यक्रम किया गया।

गोला का वास (अलवर) में सिद्धयोग कार्यक्रम

दिनांक 09.02.02018 एवं 10.02.2018 को अलवर जिले के ग्राम- 'गोला का बास' में व अन्य गाँवों में विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में गुरुदेव के द्वारा चलाये जा रहे सिद्धयोग की जानकारी दी गई तथा सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में ''संजीवनी मंत्र'' सुनाया गया व सद्गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करवाया गया। ध्यान के दौरान कई बच्चों को स्वतः योग होने लगा व कई तरह की अनुभूतियाँ भी होने लगी। सभी लड़के-लड़कियों व स्कूल स्टाफ को सिद्धयोग की सामग्री-किताबें, पेम्पलेट व कार्ड बांटे गये।

ग्राम-छोटी इन्दोक व सरिस्का (अलवर) में सिद्धयोग कार्यक्रम

दिनांक 12.02.2018 को अलवर जिले के छोटी इन्दोक एवं सरिस्का ग्राम में तथा तहसील- थानागांजी के विभिन्न स्कूल व कॉलेजों में जाकर सिद्धयोग की

www.the-comforter.org

जानकारी दी गई व सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की आवाज में ''संजीवनी मंत्र'' सुनाया व उनकी तस्वीर पर ध्यान करवाया गया। ध्यान के दौरान कई विद्यार्थीयों को स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ हुई। कई तरह की अनुभूतियाँ होने लगी। बच्चों व स्टाफ को सिद्धयोग प्रचार सामग्री-पेम्पलेट, कार्ड व किताबें बाँटी गई।

अलवर शहर में सिद्धयोग कार्यक्रम

दिनांक 14.02.2018 एवं 15.02.2018 को अलवर शहर के आस-पास विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में तथा सार्वजनिक स्थानों पर सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की आवाज में ''संजीवनी मंत्र'' सुनाकर सद्गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करवाया गया। ध्यान के दौरान कईयों को स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ हुई व कई तरह की अनुभूतियाँ हुई।

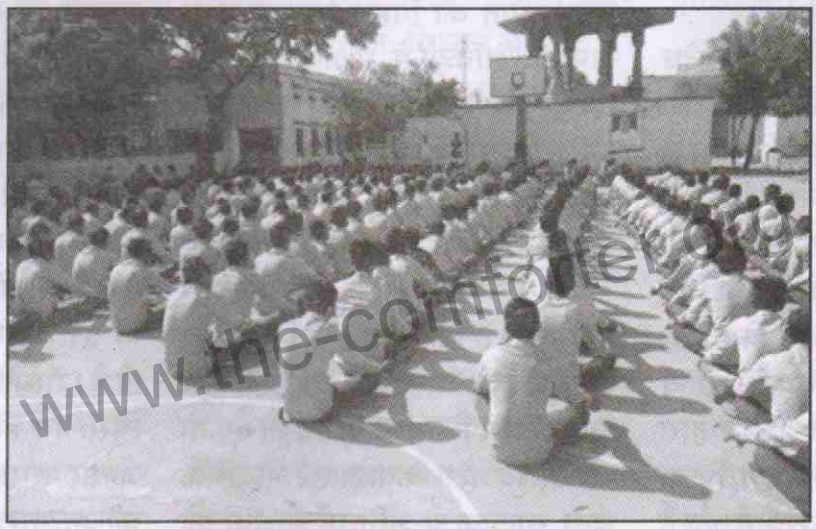

दिनांक 16.02.2018 एवं 17.02.2018 को अलवर जिले के सोडावास, गादूवास आदि गाँवों के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग की जानकारी दी गई एवं गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की दिव्य आवाज में ''संजीवनी मंत्र'' सुनाकर उनकी तस्वीर पर ध्यान करवाया गया। सिद्धयोग सामग्री बाँटी गई।

केन्द्रीय जेल 'अलवर' में सिद्धयोग कार्यक्रम

दिनांक 18.02.2018 को केन्द्रीय जेल अलवर में कैदियों एवं जेल स्टाफ को ''सिद्धयोग दर्शन'' की जानकारी दी गई। सद्गुरुदेव की आवाज में ''संजीवनी मंत्र'' सुनाकर उनकी तस्वीर पर ध्यान करवाया गया। ध्यान के दौरान कई कैदियों को योग होने लगा एवं कई अनुभूतियाँ हुई। कैदियों व जेल स्टाफ को सिद्धयोग सामग्री-किताबें, पेंपलेट व कार्ड बांटे गये।

सवाई माधोपुर जिले के गंगापुर सिटी में ''सिद्धयोग कार्यक्रम''

दिनांक 19.02.2018 एवं 20.02.2018 को गंगापुर सिटी के विभिन्न स्कूलों एवं कोचिंग सैंटरों में सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई एवं सद्गुरुदेव की दिव्य आवाज में ''संजीवनी मंत्र'' सुनाकर गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करवाया गया व दिनांक 20.02.2018 की शाम को मिर्जापुर गांव में प्रोजक्टर पर सद्गुरुदेव की पिक्चर दिखाई गई व ''मंत्र'' सुनाकर ध्यान करवाया गया। व सिद्धयोग सामग्री पेम्पलेट, कार्ड व किताबें बांटी गई।

करौली जिले के करणपुर में ''सिद्धयोग कार्यक्रम''

दिनांक 21.02.2018 को करौली जिले के करणपुर कस्बे में सिद्धयोग कार्यक्रम हुए। जिसमें विभिन्न स्कूलों में व शाम को सार्वजनिक कार्यक्रम प्रोजेक्टर पर गुरुदेव की पिक्चर दिखाकर व ''मंत्र'' सुनाकर ध्यान करवाया गया। व सिद्धयोग सामग्री बांटी गई। सार्वजनिक कार्यक्रम में एक व्यक्ति को ध्यान के दौरान 10 मिनट के दौरान समाधी लग गई।

दिनांक 22.02.2018 को दौसा (राजस्थान) में मन्डारी ग्राम में पांच बड़ी स्कूलों व कॉलेजों में सिद्धयोग की जानकारी दी गई व गुरुदेव की आवाज में संजीवनी 'मंत्र' सुनाकर गुरुदेव की तस्वीर पर विद्यार्थियों व शिक्षकों को ध्यान करवाया गया।

ध्यान होने के बाद में कई विद्यार्थियों ने अपनी अनुभूतियाँ बताई जिसमें से कईयों को ध्यान में प्रकाश पुंज में भगवान् ''श्री कृष्ण'' दिखे तथा कईयों को भगवान् ''शिव'' दिखाई दिये। कई बच्चों को गुरुदेव व दादा गुरुदेव के दर्शन हुए।

दिनांक 23.02.2018 को राजस्थान के दौसा जिले के ग्राम-'लालसोट' गाँव में सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर विभिन्न स्कूल-कॉलेजों में संजीवनी मंत्र के साथ 15 मिनट ध्यान करवाया गया।

इस प्रकार 23 दिनों में लगभग 100 से ज्यादा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया। हजारों विद्यार्थियों व शिक्षकों को सिद्धयोग दर्शन से रूबरू कराया गया।

-सांगाराम चौधरी
जोधपुर

www.the-comforter.org

सर्वव्यापी सद्गुरुदेव से अनन्य प्रेम

साधक की अपनी सम्पूर्ण निष्ठा और समर्पण का केन्द्र बिन्दु केवल मात्र श्री सद्गुरुदेव ही हों।

साधना, आराधना किसी भी साधक के लिये उसका अपना निजी मामला है ।

जोकि साधक अपने आध्यात्मिक उत्थान के लिये करता है ?

जिसमें सर्वव्यापी गुरु सत्ता स्वयं साधक के अन्दर से प्रतिक्षण साधक का यथासमय यथोचित मार्ग दर्शन करती है। आराधना व्यक्तिगत चीज है,

न कि सार्वजनिक, इसलिये गुरुदेव द्वारा मिलने वाले, अन्तर्निर्देशों का संबंध, साधक के व्यक्तिगत विकास से होता है। यह कोई सार्वजनिक चीज नहीं होती है। क्योंकि प्रत्येक साधक के, पूर्व अर्जित संस्कार और समझ संबंधी ज्ञान चेतना का स्तर भिन्न भिन्न होता है।।

इसलिये सबकी अनुभूतियाँ व यौगिक क्रियाएँ तथा श्री गुरुदेव द्वारा अन्दर से मिलने वाले आदेश भिन्न भिन्न होते हैं। इसमें भी एक बात और है जैसा कि श्री अरविन्द हमें सचेत करते हुए बताते हैं, कि जब तक मानस के स्तर पर पूर्ण निश्चल नीरवता की अवस्था न बन जाये तब तक अन्दर से या तो स्वयं की ही इच्छा, अभिलाषा, दबी कुचली हुई कामना, वासना संबंधी आवाजें सुनाई देती हैं।।

अथवा इन्हीं से संबंधित दृश्य दिखाई देते हैं या फिर अन्दर से केवल भूतप्रेत ही बोलते हैं, जिन्हें साधक आध्यात्मिक संदेश समझ बैठता है और साधना विरोधी शक्तियों के ऐसे दुश्चक्र में फंस जाता है जिसमें से निकलना कम से कम स्वयं की शक्ति से तो कैसे भी संभव नहीं है। इसलिये अंदर से आने वाले दिशा-निर्देशों और आवाजों के प्रति विवेक से काम लेना चाहिये। यदि इनमें स्वयं की कोई वास्तविक आध्यात्मिक विकास संबंधी बात न होकर किसी और के लिये कोई बात है तो तुरंत सतर्क हो जाईये क्योंकि यहीं से तामसिक शक्तियों का खेल शुरू होता है।

सारा ब्रह्माँड अंदर है तो देव, दानव इत्यादि सब कुछ अंदर ही हैं।

गुरुदेव कहते थे कि जड़ और चेतन जगत् की मिशन विरोधी सभी तामसिक शक्तियों से, मैं अकेला ही लड़ रहा हूँ। पूज्य गुरुदेव के मिशन की विरोधी इन शक्तियों को सर्वाधिक खतरा, गुरुदेव के नीले झण्डे तले इकट्ठा हुए सच्चे साधकों की एकता से है।

इन शक्तियों का हर संभव प्रयास यही रहता है कि गुरुदेव के मिशन हेतु एकजुट होने वाले साधकों को कैसे तितर-बितर किया जाए, इनकी एकता को कैसे विघटित किया जाए? अत्यधिक चतुर चालाक ये शक्तियाँ साधक को उसके अपने ही आदर्शवादी विचारों के भँवर जाल में उलझा कर, कब, क्या अनर्थ कारी काम उससे करवा बैठे कुछ नहीं कहा जा सकता।

इन दानवीय तामसिक शक्तियों का वाहक बनने से बचने का एकमात्र सटीक उपाय यही है कि अन्दर हृदय में गुरुदेव के अलावा किसी को भी, कोई स्थान, किसी भी कीमत पर नहीं दिया जाये।

गुरुदेव के अलावा किसी को भी हृदय में अंदर जगह दी और गड़बड़ शुरू होते देर नहीं लगती।

इसलिये अत्यावश्यक है कि साधक की अपनी सम्पूर्ण निष्ठा और समर्पण का केन्द्र बिन्दु केवल मात्र श्री गुरुदेव हों।

और कोई भी, कदापि नहीं। इसी में हमारा परम कल्याण है। इस मार्ग में केवल श्रीगुरु ही हमारे परम सहारा, सहायक और मार्ग निर्देशक हैं। बाकि सब भटकाव है।

परमात्मा स्वरूप श्री गुरुदेव के अलावा कोई भी व्यक्ति, वह हमारा चाहे कितना भी नजदीकी अथवा प्रिय क्यूँ न हो, हमारे आध्यात्मिक विकास में हमारा तनिक भी भला नहीं कर सकता।

साधनारत एक साधक के अंदर घटित होने वाली **अवश्यंभावी आध्यात्मिक घटना तो यह है कि, एक दिन अंतर-जगत् में गुरु-शिष्य के द्वैत भाव को भी समाप्त होना ही है।** साधक के अहम् को गुरुसत्ता में विसर्जित होना ही पड़ेगा। तब कहीं जाकर परमात्मा के परमानन्द की स्वयं की आत्मसत्ता की आत्मानुभूति संभव होगी जैसा कि कहा गया है कि

प्रेम गली अति सांकरि,
जा में दो न समाय ।
जब मैं था तब हरि नहीं,
अब हरि है मैं नाय ।।

गुरु को सोचो, गुरु को विचारो।
गुरुनाम को जपो गुरु को ध्याओ ।
गुरुप्रेम में खो जाओ
है इसके अलावा जो कुछ भी
सब व्यर्थ है बचके निकल जाओ।
जय हो श्री सद्गुरुदेव की...

संकलनकर्ता
-हरकू शर्मा, कोटा

❖❖❖

www.the-comforter.org

अनुभव-प्रधान युग का आगमन

अतः, व्यक्ति का तथा संसार का, जिसका व्यक्ति सदस्य है, सत्य एवं विधान खोज निकालने के लिये, यह व्यक्तिप्रधान युग मानवजाति का मौलिक प्रयास है। परम सत्य को खोज निकालने के लिए, आत्मा को सत्य से साक्षात्कार करने के लिए जिस अनुभूति और जीवन के अनुभव की जरूरत है, उस अनुभव की शुरूआत हो चुकी है। आगामी मानव जाति दिव्य जीवन धारण करेगी, उस विषय पर श्री अरविन्द ने सविस्तार वर्णन किया है कि आत्मा के पोषण के लिए एक अनुभव प्रधान युग का आगमन हो रहा है जिसमें मनुष्य पूर्णता प्राप्त करेगा।

अतः व्यक्ति का तथा संसार का, जिसका व्यक्ति सदस्य है, सत्य एवं विधान खोज निकालने के लिये, यह **व्यक्तिप्रधान युग** मानवजाति का मौलिक प्रयास है। जैसा कि यूरोप में हुआ, यहाँ भी इसका आरंभ, विशेषकर धर्म के क्षेत्र में, उस आच्छादित, विरूप अथवा विकृत कर दिया है। परंतु इसे उस प्रथम पग से आगे अन्य सत्यों की ओर बढ़ना है और अंत में मानव जीवन और कर्म के समस्त क्षेत्रों में विचार और व्यवहार की आधारशिलाओं का सामान्य अनुसंधान करना है।

इसका अंतिम अनिवार्य परिणाम होगा धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला और समाज का **क्रांतिकारी पुनर्निर्माण**। यह युग आरंभ में व्यक्ति के मन तथा बुद्धि के प्रकाश के तथा जीवन के प्रति उसकी माँग और जीवनसंबंधी उसके अनुभव के सहारे आगे बढ़ता है; **परंतु इसे फिर व्यक्ति से विश्व की ओर आना होगा।** क्योंकि अपने निजी प्रयत्नों के फलस्वरूप व्यक्ति को शीघ्र पता चल जाता है कि अपनी सत्ता के विधान तथा सत्य के अबाध अन्वेषण के लिये पहले किसी ऐसे **विश्वजनीत सिद्धांत** तथा सत्य की खोज कर लेनी आवश्यक है जिसके साथ वह व्यक्तिगत विधान एवं सत्य का समन्वय स्थापित कर सके। विश्व का वह एक अंग है; अपनी अंतरतम आत्मा को छोड़कर शेष सत्ता में वह पूर्णतः विश्व के ही अधीन है, इस विशाल सुघटित पिण्ड में छोटा-सा कोष है: उसकी सत्ता का तत्त्व इसी **विश्व-पिण्ड** से लिया गया है और विश्व के **जीवन-विधान** के द्वारा ही उसके जीवन-विधान का नियंत्रण तथा निर्धारण होता है। जगत्-संबंधी एक नवीन दृष्टि तथा ज्ञान से ही उसे अपनी सत्ता, शक्ति सामर्थ्य एवं सीमाओं के, सत्ता के प्रति अपनी माँग के तथा अपनी वैयक्तिक एवं सामाजिक भवितव्यता के पथ और उसके सुदूर या तात्कालिक लक्ष्य के विषय में नया दृष्टिकोण और ज्ञान प्राप्त होना चाहिये।

यूरोप में तथा आधुनिक काल में इसने एक स्पष्ट एवं शक्तिशाली भौतिक विज्ञान का स्वरूप धारण कर लिया है: इसकी प्रगति भौतिक विश्व के नियमों के आविष्कार के द्वारा एवं मानवजीवन की उन आर्थिक एवं समाजविज्ञान-संबंधी अवस्थाओं के आधार पर हुई है, जिनका निर्धारण मनुष्य की भौतिक सत्ता, उसकी पारिपार्श्विक स्थितियों, उसके विकासात्मक इतिहास, उसकी शारीरिक, प्राणिक, वैयक्तिक एवं सामूहिक आवश्यकता के आधार पर हुआ करता है। परंतु कुछ काल के पश्चात् यह अवश्य ही स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य भौतिक और प्राणमय सत्ता के साथ-साथ मनोमय सत्ता भी है, बल्कि भौतिक या प्राणमय की अपेक्षा आवश्यक रूप में मनोमय अधिक है।

यद्यपि उसकी मनोवैज्ञानिकता उसकी भौतिक सत्ता एवं परिस्थितियों से अत्यधिक प्रभावित एवं सीमित है परंतु अपने मूल में वह उनके द्वारा निर्धारित नहीं होती, प्रत्युत वह उनकी क्रियाओं के प्रति निरंतर प्रतिक्रिया करती है, सूक्ष्म रूप में उनका निर्धारण करती है, और जीवन के प्रति अपनी मनोवैज्ञानिक माँग की सामर्थ्य के द्वारा उनके नवनिर्माण पर प्रभाव तक डालती है।

मानवजाति के मन और आत्मा तथा उसके प्राण और शरीर के बीच के आपसी संबंध के द्वारा उत्पन्न संभावनाओं, परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों के प्रति मनुष्य की मनोवैज्ञानिक माँग के द्वारा ही उसकी आर्थिक अवस्था तथा सामाजिक संस्थाएँ शासित होती हैं। इसलिये उसे पदार्थों के सत्य को और उस सत्य के संबंध से अपनी सत्ता के विधान को खोज निकालने के लिये अधिक गहरे जाना होगा और अपने तथा पदार्थों के आभ्यंतरिक रहस्य एवं उनके बाह्य रूपों एवं परिस्थितियों की थाह लेनी होगी।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

अहं से मुक्ति

किसी अनिर्देश्य और असीम वस्तु की, एक अवर्णनीय शान्ति, नीरवता, हर्ष एवं आनंद की, पूर्ण निर्व्यक्तिक शक्ति के भान की, शुद्ध सत्ता, शुद्ध चेतना एवं सर्व-व्यापक उपस्थिति की अवस्थाएँ अधिकाधिक बहुल रूप में आती हैं।

अहं अपने-आपमें या अपनी अभ्यासगत चेष्टाओं में अड़ा रहता है, परन्तु उसकी शान्ति एक अधिकाधिक अभ्यस्त अवस्था बनती जाती है, उधर उसकी चेष्टाएँ छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, कुचली जाती या उत्तरोत्तर त्याग दी जाती हैं, उनकी तीव्रता मन्द पड़ जाती है तथा उनकी क्रिया पंगु या यान्त्रिक बन जाती है।

अन्त में हम अपनी सम्पूर्ण चेतना परम पुरुष की सत्ता में सतत अर्पित करने लगते हैं। आरम्भ में जब हमारी बाह्य प्रकृति की अशान्त अस्तव्यस्तता एवं अन्धकारजनक अपवित्रता अपनी हलचल मचाये होती है, जब मानसिक, प्राणिक और शारीरिक अहंभाव अभी शक्तिशाली होते हैं, यह नया मानसिक दृष्टिकोण, ये अनुभव अतीत कठिन प्रतीत हो सकते हैं :

पर एक बार जब वह त्रिविध अहंभाव निरुत्साहित या मृतप्राय हो जाता है और आत्मा के कारण संशोधित एवं पवित्र हो जाते हैं, तब एक सर्वथा शुद्ध, प्रशान्त, निर्मल, विस्तृत चेतना में एकमेव की पवित्रता, अनन्तता और शान्ति स्वच्छ सरोवर में आकाश की भांति विशदतया प्रतिबिम्बित होती हैं। प्रतिबिम्बित करनेवाली चेतना का प्रतिबिम्बित चेतना के साथ मिलना या इसे अपने अन्दर ग्रहण करना उत्तरोत्तर अनिवार्य एवं सम्भव होता जाता है, यह निर्विकार निर्व्यक्तिक विशाल चिदाकाश तथा वैयक्तिक सत्ता का यह किसी-समय-चंचल आवर्त या **संकुचित प्रवाह**-इन दोनों के बीच जो अन्तर तथा उसे लांघना या मिटाना अब कोई दुःसाध्य एवं असम्भवनीय कार्य नहीं रह जाता और यहाँ तक कि इस अवस्था का अनुभव बारंबार भी हो सकता है, भले यह अभी पूर्ण रूप से स्थायी न भी हो। क्योंकि यदि अहंपूर्ण हृदय और मन के बन्धन पहले ही काफी क्षीण एवं शिथिल पड़ चुके हों तो शुद्धि के पूर्ण होने से पहले भी जीव मुख्य रज्जुओं को एकाएक तोड़कर गगन में मुक्त किये गये पक्षी की तरह ऊपर की ओर उड़ता हुआ या एक मुक्त प्रवाह की तरह विशाल रूप में फैलता हुआ एकमेव और अनन्त की ओर प्रयास कर सकता है।

सबसे पहले सहसा ही विराट् चेतना की अनुभूति होती है, मनुष्य अपनी सत्ता को **विश्वमय सत्ता** में होम देता है; उस विश्वमयता से वह अधिक सुगमता के साथ परात्पर की प्राप्ति के लिये अभीप्सा कर सकता है। जिन दीवारों ने हमारी चेतन सत्ता को कैद कर रखा था, वे परे हट जाती हैं और फट जाती है या ध्वस्त होकर ढह जाती हैं; पृथक् अस्तित्व और व्यक्तित्व का, देश या काल में अथवा प्रकृति की क्रिया एवं उसके नियम के अन्तर्गत स्थित होने का समस्त भान लुप्त हो जाता है। अब किसी अहं या किसी निश्चित एवं निर्देश्य व्यक्ति का अस्तित्व नहीं रह जाता, रह जाती है केवल चेतना, केवल सत्ता, केवल शान्ति और आनन्द; व्यक्ति एक अमर, **सनातन एवं अनन्त सत्ता** बन जाता है। तब उसके जीवात्मा का अस्तित्व सनातन में किसी एक स्थल पर शान्ति, स्वातंत्र्य और आनन्द के संगीत के स्वर के रूप में ही शेष रह जाता है।

जब मानसिक सत्ता अभी पर्याप्त रूप से शुद्ध नहीं हुई होती तो मुक्ति प्रारम्भ में आंशिक एवं अस्थायी प्रतीत होती है; ऐसा लगता है कि जीव पुनः अहंमय जीवन में उतर आता है और उच्चतर चेतना उससे पीछे हट जाती है। वास्तव में होता यह है कि निम्नतर प्रकृति और उच्चतर चेतना के बीच बादल छा जाता या पर्दा पड़ जाता है और प्रकृति कुछ समय के लिये फिर कार्य करने की अपनी पुरानी आदत का अनुचरण करने लगती है; तब इस पर उस उच्च अनुभव का दबाव तो अवश्य पड़ता रहता है, पर न तो इसे सदा उसका ज्ञान रहता है और न उसकी स्मृति ही उपस्थिति रहती है।

तब इसके अन्दर जो कार्य करता है वह पुराने अहं का एक प्रेत होता है जो हमारी सत्ता में अभी तक बची हुई **अव्यवस्था और अपवित्रता के अवशेषों के आधार पर पुरानी आदतों की यांत्रिक पुनरावृत्ति को आश्रय देता रहता है।** बादल आ-आकर चला जाता है, आरोहण और अवरोहण का लयताल फिर-फिर चालू होता रहता है जबतक कि अपवित्रता को निकालकर बाहर नहीं कर दिया जाता।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

समाधि

समाधि की अवस्था में जीवन का त्याग करने से वह सीधे ही सत्ता की उस उच्चतर भूमिका को प्राप्त कर लेता है, जिसकी वह अभीप्सा करता है।

पहली बात तो यह है कि समाधि के अनुभव जाग्रत् मन के लिये शून्यवत् तभी तक रहते हैं, जब तक अन्तरात्मा समाधि की अभ्यस्त नहीं हो जाती; जैसे-जैसे यह अपनी समाधि पर अधिकार प्राप्त करती है, वैसे-वैसे यह विस्मृति के किसी प्रकार के भी **अन्तराल** के बिना आन्तरिक मन से बाह्य जाग्रत मन तक आने में समर्थ बनती जाती है।

दूसरे, जब एक बार ऐसा हो जाता है तो जो कुछ आन्तरिक अवस्था में प्राप्त हुआ है, उसे जाग्रत चेतना के द्वारा प्राप्त करना अधिक **सुगम** हो जाता है और साथ ही उसे आसानी से एक ऐसा रूप भी दिया जा सकता है कि वह जाग्रत् अवस्था के जीवन की स्वाभाविक अनुभूति, शक्ति, सामर्थ्य और मानसिक अवस्था बन जाये।

ऐसा होने पर सूक्ष्म मन, जो साधारणतः स्थूल सत्ता की आग्रहपूर्ण माँग के कारण आच्छादित रहता है, जाग्रत अवस्था में भी शक्तिशाली बनता जाता है, जिससे कि अन्त में विशाल बनता हुआ मानव जाग्रत अवस्था में भी अपने स्थूल शरीर की तरह अपने अनेक सूक्ष्म शरीरों में भी निवास कर सकता है, उनसे तथा उनके अन्दर सचेतन हो सकता है, उनकी इन्द्रियों, क्षमताओं और शक्तियों का प्रयोग करके अतिभौतिक सत्य, चेतना और अनुभव का स्वामी बनकर रह सकता है।

सुषुप्ति अवस्था में आत्मा, सत्ता की उच्चतर शक्ति की ओर आरोहण करती है अर्थात् वह विचार से परे **शुद्ध चेतना**, भावावेग से परे **शुद्ध आनन्द** तथा संकल्प से परे **शुद्ध प्रभुत्व** के स्तर की ओर ऊपर उठती है; सच्चिदानन्द की जिस **परमोच्च** स्थिति में से इस जगत् के सब कार्य-व्यापार उत्पन्न होते हैं, उसके साथ **एकत्व लाभ** करने के लिये **सुषुप्ति अवस्था** एक द्वार का काम करती है परन्तु यहाँ हमें प्रतीकात्मक भाषा के गर्तजालों से बचने का ध्यान रखना होगा।

इन उच्चतर भूमिकाओं के लिये **'स्वप्न'** और **'सुषुप्ति'** शब्दों का प्रयोग एक रूपक से अधिक कुछ नहीं। यह रूपक सामान्य स्थूल मन के उस अनुभव से लिया गया है जो उसे अपरिचित भूमिकाओं के विषय में होता है। यह सत्य नहीं है कि 'सुषुप्ति' (अर्थात् पूर्ण निद्रा) नामक तीसरी भूमिका में **'पुरुष'** निद्रा की अवस्था में होता हैं बल्कि सुषुप्तिगत **'पुरुष'** को प्राज्ञ अर्थात् प्रज्ञा और ज्ञान का स्वामी या विज्ञानमय **'पुरुष'** और ईश्वर अर्थात् सत्ता का प्रभु कहा गया है। स्थूल मन के लिये यह सुषुप्ति (प्रगाढ़तम निद्रा) है, पर हमारी विशालतर एवं सूक्ष्मतर चेतना के लिये यह एक अधिक महान् जागृति है।

जो चीजें सामान्य मन के सामान्य अनुभव से परे की हैं पर फिर भी उसके क्षेत्र के अन्दर आती हैं वे सभी उसे स्वप्नवत् प्रतीत होती हैं; परन्तु जब वह उस **सीमा-रेखा** पर पहुँचता है जिसके आगे की चीजें उसके क्षेत्र से सर्वथा परे की होती हैं तो वह सत्य को स्वप्नावस्था की भाँति भी नहीं देख सकता, बल्कि निद्रा की शून्य बोधहीनता और अग्रहणशीलता में पहुँच जाता है। यह सीमारेखा व्यक्ति की चेतना की शक्ति के अनुसार तथा उसके **ज्ञानालोक** और जागरण की मात्रा और उच्चता के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है।

यह रेखा अधिकाधिक ऊँचाई की ओर हटती जा सकती है, यहाँ तक कि अन्त में यह मन के घेरे को भी पार कर सकती है। निःसन्देह, साधारणतया मानव-मन अतिमानसिक स्तरों पर **समाधि** की आन्तरिक जाग्रत् अवस्था के रूप में भी जाग्रत नहीं रह सकता; पर इस **असमर्थता** पर **विजय** पायी जा सकती है। इन स्तरों पर जाग्रत रहकर आत्मा विज्ञानमय विचार अथवा विज्ञानमय संकल्प और आनन्द की भूमिकाओं की स्वामिनी बन जाती है और यदि वह **समाधि-अवस्था** में ऐसा कर सके तो वह अपने अनुभव की **स्मृति** और **शक्ति** को जाग्रत अवस्था में भी ले जा सकती है।

हमारे सामने जो इससे ऊँचा

www.the-comforter.org

अर्थात् आनन्द का स्तर खुला पड़ा है उसपर जाग्रत आत्मा, उक्त रीति से ही, आनन्दमय पुरुष को उसके आत्मसमाहित और विश्व-व्याप्त दोनों रूपों में प्राप्त कर सकती हैं तथापि इससे ऊपर की भूमिकाएँ भी हो सकती हैं जहाँ से वापस आती हुई यह इसके सिवाय और कोई स्मृति नहीं ला सकती कि **''जैसे भी हो, मैं ऐसे आनन्द में थी जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकती''**; वास्तव में वह अपरिचिन्न सत्ता का एक ऐसा आनन्द है जिसे विचार के द्वारा प्रकट करना अथवा रूपक या आकार के द्वारा वर्णित करना जरा भी सम्भव नहीं है।

हो सकता है कि इस भूमिका में अस्तित्व का भान भी एक ऐसे अनुभव में विलुप्त हो जाये जिसमें जगत् की सत्ता का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता और बौद्धों का निर्वाण-रूपी प्रतीक ही एकमात्र **सर्वोच्च सत्य** प्रतीत होता है। आत्मा के जागरण की शक्ति कितने ही ऊँचे स्तर तक क्यों न पहुँच जाये, तथापि प्रतीत होता है कि उससे परे एक ऐसी भूमिका अवश्य है जिसमें **सुषुप्ति** के रूपक का प्रयोग फिर भी उपयुक्त होगा।

समाधि या योगलीनता की स्थिति का मूलतत्त्व यही है-इसके जटिल दृग्विषयों की तह में जाने की अभी हमें जरूरत नहीं। इतना देख लेना ही काफी है कि पूर्णयोग में इसकी उपयोगिता दो प्रकार की हैं। यह सच है कि एक सीमा तक जिसका ठीक-ठीक वर्णन या निर्धारण करना कठिन है, समाधि से प्राप्त हो सकने वाली प्रायः सभी अनुभूतियाँ समाधि का आश्रय लिये बिना भी प्राप्त की जा सकती है। तथापि आध्यात्मिक एवं आन्तरात्मिक अनुभव के कुछ ऐसे शिखर भी है।

जिनका बिम्बग्राही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव गहराई के साथ तथा पूर्ण रूप में **योगसमाधि** के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। पर जो अनुभव किसी और तरीके से भी प्राप्त हो सकता है, उसके लिये भी समाधि एक प्रस्तुत साधन या एक सुविधापूर्ण विधि का काम करती है; जिन भूमिकाओं में उच्च आध्यात्मिक अनुभव की खोज की जाती है वे जैसे-जैसे अधिक ऊँची एवं **दुष्प्राप्य** होती जाती है। वैसे-वैसे यह समाधि की विधि भी अनिवार्य नहीं तो अधिकाधिक सहायक अवश्य होती हैं एक बार वहाँ प्राप्त हो जाने पर इस अनुभव को जाग्रत् चेतना में भी यथासम्भव अधिक-से-अधिक लाना होगा।

क्योंकि, जो योग समस्त जीवन को पूर्ण रूप से तथा बिना किसी संकोच के अपने अन्दर समाविष्ट करता है उसमें समाधि का पूरा लाभ तभी प्राप्त होता है, जब इसकी प्राप्तियों को मनुष्य में देहधारी आत्मा के पूर्ण जागरण के लिये स्वाभाविक और अनुभूति बनाया जा सके।

समाप्त

www.the-comforter.org

आश्चर्यकारक वस्तु क्या है?

उस बृहत् पौराणिक ग्रन्थ ''महाभारत'' में एक आख्यान है जिसमें कथानायक युधिष्ठिर से धर्म ने प्रश्न किया कि संसार में सबसे आश्चर्यकारक वस्तु क्या है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि मनुष्य अपने जीवन भर प्रायः प्रतिक्षण अपने चारों ओर **सर्वत्र मृत्यु का ही दृश्य देखता है**, तथापि उसे ऐसा दृढ़ और अटल विश्वास है कि **मैं मृत्युहीन हूँ**। और मनुष्य-जीवन में यह सचमुच अत्यन्त आश्चर्यजनक है। यद्यपि भिन्न भिन्न मतावलम्बी भिन्न भिन्न जमाने में इसके विपरीत दलीलें करते आये और यद्यपि इन्द्रिय द्वारा ग्राह्य और अतीन्द्रिय सृष्टियों के बीच जो रहस्य का परदा सदा पड़ा रहेगा, उसका भेदन करने में बुद्धि असमर्थ है, तथापि मनुष्य पूर्ण रूप से यही मानता है कि वह मरणहीन है।

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से

भारत का भाग्योदय होने ही वाला है। हानि क्या है अवसर से चूकना

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में अर्जुन को युग युग में स्वयं प्रकट होने का स्पष्ट संकेत किया है। संसार में जब धर्म का लोप हो जाता है तब भगवान दुष्टों का विनाश करने और संत लोगों का कल्याण करके पुनः संसार में धर्म स्थापित करने के लिए युग युग में अवतार लेते हैं। पैगम्बर यानि संत लोग संसार में प्रकट होकर अपनी आध्यात्मिक शक्ति और त्याग के द्वारा सात्विक चेतना फैलाने का कार्य करते हैं। संतों के उपदेशों से जब काम चलना बन्द हो जाता है और संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, ऐसी स्थिति में भगवान अवतार लेते हैं। संसार भर से पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का सफाया करके और सात्विक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित करके स्वयं अपने धाम को पधार जाते हैं। संसार में पूर्ण शान्ति और सात्विक शक्तियों का साम्राज्य भगवान के अवतार के बिना सम्भव नहीं है। स्वयं अवतार लेने से पहले कुछ ऐसे संतों को भेजते हैं जो भगवान के अवतार के सम्बन्ध में भविष्य वाणियां करते हैं। ठीक इसी प्रकार की भविष्य वाणियां संसार भर के विभिन्न धर्मों के संत काफी समय से करने लगे हैं। मोटे तौर पर सभी एक ही बात कहते हैं कि वह शक्ति भारत के उत्तरी भाग से प्रकट होकर अपने क्रमिक विकास के साथ इस सदी के अन्त तक पूरे संसार को अपनी तरफ आकर्षित कर लेगी। संसार भर के सभी धर्मों के लोग उसकी तरफ इतने आकर्षित होंगे कि सब का ध्यान उस शक्ति पर केन्द्रित हो जायगा। सारे संसार के लोग उसके आदेशों का पालन करने लगेंगे। इस प्रकार 21वीं सदी में संसार भर में उस शक्ति के प्रभाव से सात्विक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जायगा और भारत पुनः अपने जगद्गुरु के पद पर आसीन होकर मानव मात्र (जीवमात्र) के कल्याण हेतु कार्य प्रारम्भ कर देगा।

ओमलाल
04/02/1988

www.the-comforter.org

योग के बारे में

मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ने के लिए, अपने जीवन की असंख्य समस्याओं व कष्टों से मुक्ति पाने के लिए, भारतीय सिद्धयोग दर्शन को अंगीकार करना परमावश्यक है। **समर्थ सद्गुरुदेव सियाग** ने मानव मात्र के कल्याण के लिए सिद्धयोग दर्शन को मानव मात्र में मूर्तरूप देकर समझाया है। योग से मनुष्य को अपने निज स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। इसी संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने अपनी पुस्तक-**'मानव से अतिमानव'** में विस्तार से समझाया है। साधकों के ज्ञान बोध के लिए ये शीर्षक यहाँ वर्णित किया जा रहा है।

गहराई में और भी अधिक गहराई है, ऊँचाइयों में और भी अधिक ऊँचाई है। मनुष्य अपनी सत्ता की पूर्णता तक पहुँचने से पहले अनन्त की सीमाओं तक जा पहुँचेगा, क्योंकि वह सत्ता अनन्त की है, भगवान् है।

मैं अनन्त शक्ति, अनन्त ज्ञान, अनन्त आनन्द के लिये अभीप्सा करता हूँ। क्या मैं उसे पा सकता हूँ? हां, परन्तु अनन्त का स्वभाव यह है कि उसका कोई अन्त नहीं इसलिये यह न कहो कि मैं उसे पाता हूँ, मैं "वह" हो जाता हूँ। मनुष्य इसी तरह भगवान् बनकर ही भगवान् को पा सकता है।

लेकिन भगवान् को पाने से पहले मनुष्य उनके साथ नाता जोड़ सकता है। भगवान् के साथ नाता जोड़ना ही योग है, यही परम हर्ष और सबसे उदात्त उपयोगिता है। हमने मानवता का जो घेरा विकसित किया है, उसमें भी नाते हैं। इन्हें प्रार्थना, पूजा, आराधना, यज्ञ, विचार, श्रद्धा, विज्ञान, दर्शन कहा जाता है। इसके अतिरिक्त और भी नाते हैं जो हमारी विकसित क्षमता के तो परे हैं पर हमें जिस मानवता को विकसित करना है, उसके घेरे में हैं। ये ऐसे संबंध हैं जो, साधारणतः हम जिसे योग कहते हैं उसके अभ्यास से प्राप्त होते हैं।

हम उन्हें भगवान् के नाम से न जाने। हम उन्हें प्रकृति, अपनी उच्चतर स्व, अनन्त, अनिर्वचनीय लक्ष्य कह सकते हैं। बुद्ध उनके पास इसी तरह गये थे। कट्टर अद्वैतवादी उनके पास इसी तरह जाता है। वे नास्तिक की भी पहुँच में हैं। जड़ भौतिकवादी के लिये वे जड़ द्रव्य का छद्मवेश धारण करते हैं। शून्यवादी के लिये वे निर्वाण के कक्ष में घात लगाये प्रतीक्षा करते रहते हैं।

ये यथा माम्
तांस्तथैव भजाम्यहम्।

प्रारंभिक परिभाषाएँ और वर्णन

योग की चार शक्तियाँ और चार उद्देश्य हैं- **शुद्धि, मुक्ति, आनन्द और पूर्णता।** जिस किसी ने परात्पर वैश्व, लीलामय और वैयक्तिक भगवान् की सत्ता में इन चार महानताओं का निष्पादन कर लिया वह पूर्ण और निरपेक्ष योगी है।

भगवान् की सभी अभिव्यक्तियाँ निरपेक्ष **परब्रह्म** की अभिव्यक्तियाँ हैं।

निरपेक्ष परब्रह्म हमारे लिये अज्ञेय है, इसलिये नहीं कि हम जो कुछ हैं, वह उसे कब का नास्तिक भाव है क्योंकि सचमुच हम जो कुछ हैं या जो कुछ दीखते हैं, वह परब्रह्म के सिवाय और कुछ नहीं है। वह इसलिये अज्ञेय है क्योंकि शरीरस्थ अन्तरात्मा जिन उच्चतम और शुद्धतम उपायों और अधिक-से-अधिक सशक्त और असीम यंत्रों के योग्य है, वह उन सबके लिये भी पूर्ववर्ती और परावर्ती है।

परब्रह्म में ज्ञान, ज्ञान नहीं रहता और अनिर्वचनीय तादात्म्य बन जाता है। तू परब्रह्म बन जा, अगर तेरी इच्छा हो और वह स्वीकार करे, लेकिन उसे जानने की कोशिश न कर क्योंकि तू इन यंत्रों से और इस शरीर में सफलता न पायेगा।

वास्तव में तू अब भी परब्रह्म है, हमेशा था और हमेशा रहेगा। किसी और अर्थ में परब्रह्म होने के लिये तुझे पूरी तरह जगत्-अभिव्यक्ति और जगत्-परात्परता से भी पूरी तरह निकल जाना होगा।

तू इस अभिव्यक्ति से भागने के लिये लालायित क्यों हो मानो जगत् कोई अशुभ चीज है। क्या तत् ने अपने-आपको तेरे अंदर और जगत् में अभिव्यक्त नहीं किया है? हे मर्त्य में मन के धोखे में पड़ी अन्तरात्मा, क्या तू निरपेक्ष से अधिक बुद्धिमान्, अधिक शुद्ध और अधिक अच्छी है? जब तत् तुझे खींच ले तब तेरा यहाँ से जाना अनिवार्य होगा, जब तक उसकी शक्ति तेरे अंदर है तब तक तेरा जाना असंभव है। अपने मन को कभी इतने भयंकर रूप से जाने के लिये बिलख-बिलख कर मत रुला।

अतः न तो जगत् की कामना कर, न उसका त्याग। हर स्थिति या अनुभूति या वातावरण में भागवत आनन्द, शुद्धि, स्वाधीनता और महानता की खोज कर।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर, उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

www.the-comforter.org

आकाश और पृथ्वी का मिलन-योग

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

मैं, जिस दिव्य विज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ, विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव-जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञान की बिल्कुल नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार मानती है और रखती भी है, परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की शाजिश कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएंगे, सम्भव नहीं लगता।

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

14-1-2006
AVSK, जोधपुर

योग का सर्वोत्तम उद्देश्य

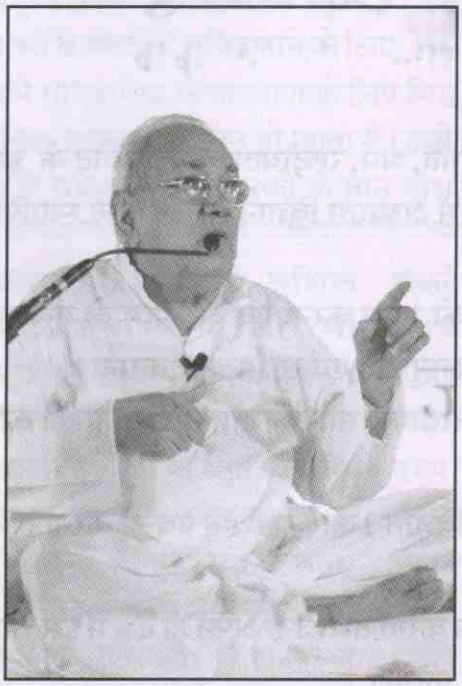

"योग द्वारा हम मिथ्यात्व में से **सत्य** में, दुर्बलता से **बल** में, दुःख-दर्द से **आनंद** में, दासता में से **स्वाधीनता** में, मृत्यु से **अमरता** में, अंधेरे से **प्रकाश** में, अस्तव्यस्तता से **शुद्धि** में, अपूर्णता से **पूर्णता** में, आत्म विभाजन से **ऐक्य** में और माया से **भगवान्** में उठ सकते हैं। योग के अन्य सभी उपयोग विशेष और आंशिक लाभ है, जो हमेशा अनुसरणीय नहीं होते। जो **भगवान्** को पाने का लक्ष्य अपनाता है, वही **पूर्णयोग** है। **भागवत पूर्णता** का साधक ही पूर्णयोगी है।"

-महर्षि श्री अरविन्द

"मानव से अतिमानव की ओर" पुस्तक पृष्ठ-167

सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित योग के पथ पर आरूढ होकर, उनके द्वारा प्रदत दिव्य संजीवनी मंत्र के सघन जप व नियमित ध्यान द्वारा भागवत पूर्णता को प्राप्त करना संभव है।

कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ-

ध्यान-बाह्य इन्द्रियों के प्रयोग के बिना केवल न सोचने की क्रिया या भाव, सोच, मन, गौर, भावना, समझ, किसी बात या कार्य में मन के लीन होने की क्रिया, बुद्धि, स्मृत, धारणा, सोच-विचार, चित्त की एकाग्रता, ख्याल या किसी एक विषय पर मन को स्थिर करने की क्रिया, चित्त।

ध्याता-विचार करने वाला, ध्यान करने वाला।

ध्यात-सोचा हुआ, ध्यान किया हुआ।

ध्यानना, ध्याना-बराबर स्मरण करना, ध्यान करना।

ध्यानमय-ध्यानपूर्ण, ध्यानस्वरूप।

ध्यानाभ्यास-ध्यान का अभ्यास, समाधि।

ध्यानावस्थित-ध्यानमग्न, ध्यान में लगा हुआ।

ध्यानिक-जिसकी प्राप्ति या सिद्धि ध्यान के द्वारा हो, ध्यान गम्य।

ध्यानी-ध्यानशील, जो बराबर परमात्म चिंतन किया करता हो, नियमित एकाग्र होकर ध्यान करने वाला।

ध्येय-उद्देश्य, लक्ष्य, ध्यान का विषय, ध्यान करने योग्य, वह विषय जिसका ध्यान रखकर प्रयत्न किया जाय।

ध्रुव-स्थिर,निश्चित, दृढ़, अटल, जिसके ठीक या सत्य होने में कुछ भी संदेह न हो,पक्का, सदा एक रूप रहने वाला, नित्य, शाश्वत। एक यज्ञपात्र, एक गुरु और पुनः तीन लघु वर्ण होते हैं, जिसमें क्रम से एक लघु, रगण का एक भेद, उत्तानपाद के एक पुत्र का नाम, एक गुरु और पुनः आठ वसुओं में से एक पर्वत, सन्तति, फलित ज्योतिष का एक प्रकार, पक्षी, ध्रुवतारा, वटवृक्ष, भँवरी, रोमावर्त, गीत का आरंभिक अंश।

ध्रुवक-टेक, टेर, स्थाणु, गीत का वह आरंभिक अंश जो बराबर दुहराया जाता है।

ध्वज-चिह्न, मेड़, खाट की पाटी, अभिमान, गर्व, डंडा, पताका, ध्वजा लेकर चलने वाला मनुष्य, झंडा, लिंग। Avsk मिशन का नीला ध्वज है, इसी ध्वज के बेनर तले संपूर्ण विश्व में शांति की स्थापना होगी।

नियम-एक संकल्प जिसका सदा निर्वाह किया जाय,एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का निर्दिष्ट स्थान पर होना स्थिर कर दिया जाय, योग का एक अंग, विधान(कई बार कहा जाता है कि ये तो ईश्वर क विधान है, ये तो सद्गुरुदेव का विधान है नियम है) ,रीति (कहावत है रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाये पर वचन न जाये।), दबाव, संकल्प, परम्परा, क्रम, शासन, व्यवस्था, प्रतिज्ञा, अंगीकार, निश्चय, पद्धति, विधि या निश्चय के अनुसार प्रतिबंध, कायदा, शिव, विष्णु, अनुशासन, परिमिति, रोक।

❖❖❖

www.the-comforter.org

वास्तविक पालनकर्त्ता तो ईश्वर है।

भुवनेश्वरी: (सावेश) तो क्या हमारे पालन-पोषण के लिए..... तेरा ईश्वर जाएगा नौकरी करने ? (बड़बड़ाती हुई) विचित्र तर्क है तेरा भी.... गुरु की सेवा करेगा तू..... ईश्वर नहीं.....और हमारा पालन-पोषण व सेवा करेगा ईश्वर..... तू नहीं ?

नरेन्द्र: ईश्वर तो कर्त्ता है, माँ ! और मनुष्य निमित्त। (भावुक स्वर में) मेरे लिए इस संसार में ठाकुर (स्वामीजी के गुरुदेव श्री रामकृष्ण परमहंस) से अधिक महत्त्वपूर्ण कोई भी नहीं है-

भुवनेश्वरी: (तमककर) क्या जन्मदात्री माँ भी नहीं ?

(उत्तर में मुस्करा देता है नरेन्द्र।)

नरेन्द्र: (भावुक स्वर में) माँ। ठाकुर के साथ मेरा सम्बन्ध **'संसारी'** नहीं है।

भुवनेश्वरी: मैं नहीं जानती...ये 'संसारी' असंसारी' सम्बन्ध क्या होते हैं ? कैसे होते हैं ?

नरेन्द्र: बस...यूं समझ ले...जैसा **'भक्त'** और **'भगवान्'** का होता है ?

भुवनेश्वरी: (आक्रोश भरे स्वर में) भगवान् क्या इतना कठोर होता है कभी ?

नरेन्द्र: नहीं, माँ। ठाकुर कठोर नहीं हैं। (भावुक स्वर में) एकदम कोमल हैं। मक्खन से कोमल....और स्निग्ध.....

भुवनेश्वरी: किसी असहाय विधवा माँ से उसका एकमात्र समर्थ बेटा छीन लेने वाले को तू 'कोमल' कहता है ? (सक्रोध) वह तो राक्षस से भी अधिक क्रूर व धृष्ट है। (पूर्व स्मृत्ति को कुरेदती हुई) उस संन्यासी ने ठीक ही कहा था..... बचाले मैया....अपने इस पुत्र को बचाले.... उस ढ़ोंगी और पागल..... से वरना खो बैठेगी तू इसे। (अपने को कोसती हुई) सारा दोष तो मेरा ही है, रे। मैं ही अभागिन तुझे बचा नहीं पाई.....

(एक लम्बी व्यथा भरी निःश्वास के साथ भुवनेश्वरी गहरे सोच में डूब जाती है।)

नरेन्द्र: तेरा इसमें तनिक भी दोष नहीं है, माँ (रुककर) सच तो यह है कि. ...मैं तुम्हारी इस 'सांसारिकता' के लिए जन्मा ही नहीं हूँ। सम्भवतः ईश्वर ने मेरे लिए..... कुछ और ही विधान रचा लगता है....

(सुनते ही भुवनेश्वरी का कलेजा दुर्भाग्यपूर्ण भावी आशंका से काँप उठता है।)

ये माँ बेटे के बीच वार्तालाप रोंगटे खड़े करनी वाली है। लेकिन गुरु का आदेश जहाँ हो, दुनिया के सारे रिश्ते फीके हैं-

प्रथम गुरोपदेश द्वितीय में पूरे विश्व के नाते-रिश्ते। यदि स्वामी विवेकानन्द अपने घर की परिस्थितियों को ठीक करने में लगे रहते तो सनातन धर्म का डंका विश्व पटल पर कैसे बजता ?

ऐसी कठिन परीक्षाओं से पहले के ऋषि-मुनि गुजरे हैं लेकिन समर्थ सद्गुरुदेव सियाग ने इस परम सत्य की प्राप्ति का रास्ता सहज और सरल बना दिया। उन्होंने यही आदेश दिया कि संजीवनी मंत्र के सघन जप व नियमित ध्यान द्वारा अपना संपूर्ण विकास संभव है। अपने गृहस्थ जीवन का पालन करते हुए, अपनी आराधना करनी होती है। गृह-त्याग और नौकरी छोड़ने की जरूरत ही नहीं है। **आप जहाँ हो वही अपने सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी को फैलाने के लिए तत्पर रहो। सद्गुरु जिस रूप में आपको गढ़ना चाहते है, उस रूप के लिए सबसे महत्वपूर्ण है-''आपकी आराधना''। यदि आप में बदलाव आ गया तो दुनिया स्वतः ही मानेगी।**

भगवान् या गुरु विश्व-दाता हैं, सर्व समर्थ दाता हैं। यदि भगवान् अमीर बनकर आएं तो तुम्हारे कमाए धन सम्पति का क्या उपयोग होगा ? ऐसी कौनसी वस्तु है जो आप सद्गुरु को देकर उऋण हो सकते हो ?

वह परम दयालू अपने भक्तों के उद्धार के लिए निर्बल, निर्धन और असहाय की लीला रचता है। यदि भगवान् श्री राम अकेले ही सीता मैया को लंका से ले आते तो क्या आज कलियुग में करोड़ों लोग हनुमान की पूजा करते ?

जबकि प्रत्येक कार्य से पहले हनुमान को शक्ति और सामर्थ्य तभी मिलती थी, जब वह **राम-नाम** का जप करता था। पाण्डवों की महिमा बढ़ाने के लिए भगवान् ने एक अर्जुन से लाखों का संहार करा दिया। क्या अकेला आदमी ऐसा कर सकता है ?

सनातन धर्म को विश्व धर्म बनाने के लिए आवश्यकता है-**सघन मंत्र जप व नियमित ध्यान** और तुम्हारे सम्पूर्ण समर्पण की।

Spiritual Science (स्पिरिचुअल-साइंस) का 119 वाँ अंक आपके हाथ में सौपंते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा व आप गुरु भाई-बहिनों के सराहनीय सहयोग से वैदिक दर्शन के प्रत्यक्ष परिणामों का संदेश जन-जन तक पहुँचा और पहुँच रहा है।

29 मई, 2008 को पूज्य सद्गुरुदेव के कर कमलों से इस पत्रिका का विमोचन हुआ था। गुरुदेव हमेशा से ही इसे **''अखबार''** नाम से पुकारते थे-यह अखबार वटवृक्ष की भांति तीव्र गति से फैल रहा है। दुनिया का एक ऐसा अखबार है जो नये युग, नये मानव (अतिमानव)-सवितादेव की नयी रोशनी और नयी भौर के साथ दिव्य मानव और धरती पर कल्कि अवतरण का संदेश देता है। दुनिया की असाध्य बीमारियों व समस्याओं के निदान का प्रायोगिक सूत्र इसी अखबार में निहित है। मेरी आप से यही अपेक्षा है कि इस अखबार को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने में अपनी महत्ती भूमिका निभानी चाहिए।

गुरुदेव के चित्र से ध्यान लगना, और हर समस्या का समाधान होना, सृष्टि काल से आज तक का अद्भुत और प्रथम सफल परीक्षण हैं।

-सम्पादक

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

▶ ध्यान की विधि ◀

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। अपनी समस्या के समाधान हेतु सद्गुरुदेव से करुण प्रार्थना करें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए दिव्य मंत्र का सघन जाप करें।

यदि गुरुदेव से दीक्षित नहीं हैं तो कोई भी ईश्वरीय नाम जैसे- गुरुदेव, राम, कृष्ण, वाहेगुरु, जीसस, अल्लाह आदि का मानसिक जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

▶ Method of Meditation ◀

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

दौसा, करौली व गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन हजारों विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। (19-23 फरवरी 2018)

www.treecontinuum.com

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अलवर जिले के केन्द्रीय कारागार व विभिन्न गाँवों के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (15-18 फरवरी 2018)

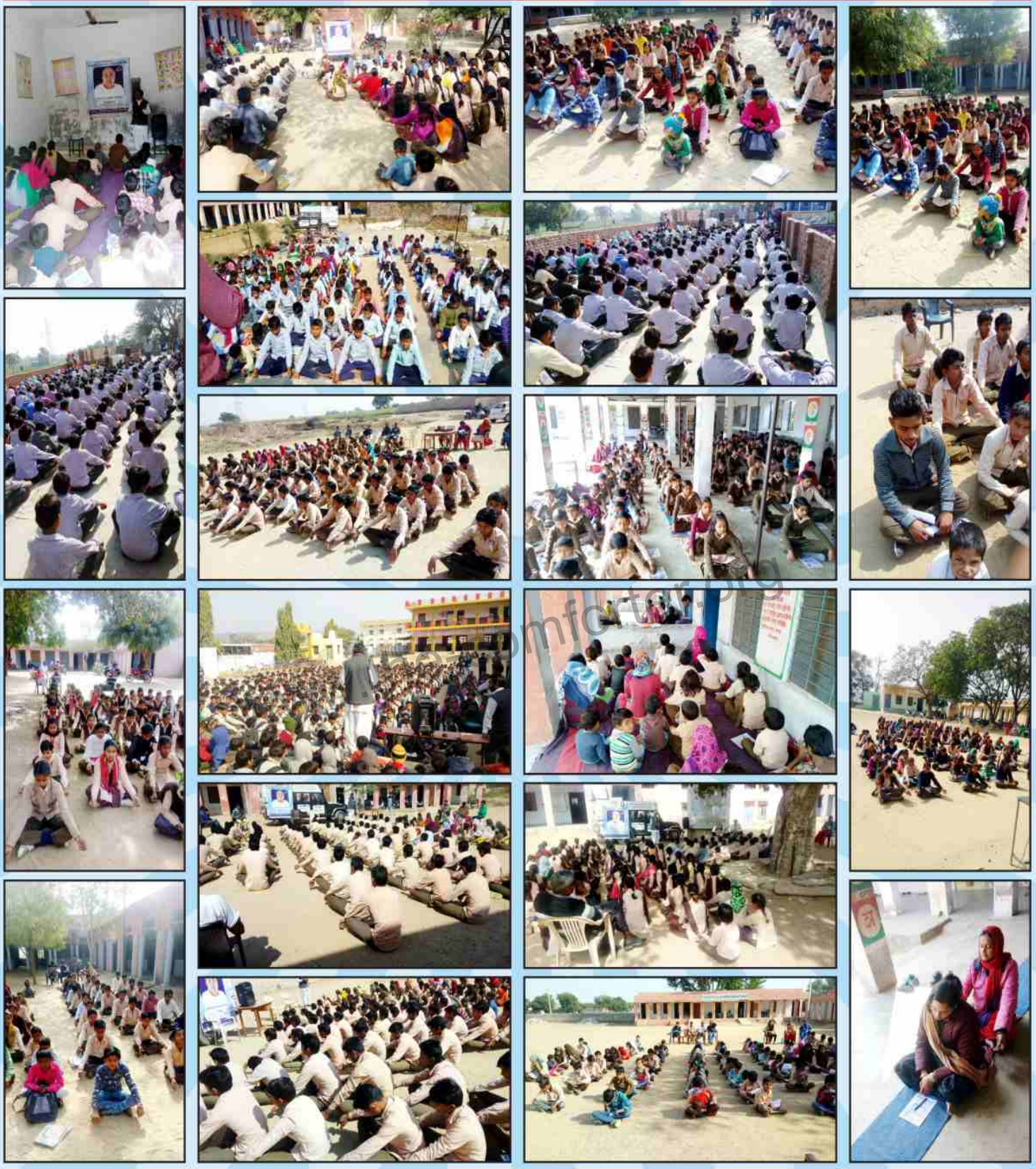

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी